

## **Resource: Indian Revised Version**

### **License Information**

**Indian Revised Version** (Hindi) is based on: Hindi Indian Revised Version, [Bridge Connectivity Solutions](#), 2019, which is licensed under a [CC BY-SA 4.0 license](#).

This PDF version is provided under the same license.

## **Indian Revised Version**

PRO



26:11, Proverbs 26:12, Proverbs 26:13, Proverbs 26:14, Proverbs 26:15, Proverbs 26:16, Proverbs 26:17, Proverbs 26:18, Proverbs 26:19, Proverbs 26:20, Proverbs 26:21, Proverbs 26:22, Proverbs 26:23, Proverbs 26:24, Proverbs 26:25, Proverbs 26:26, Proverbs 26:27, Proverbs 26:28, Proverbs 27:1, Proverbs 27:2, Proverbs 27:3, Proverbs 27:4, Proverbs 27:5, Proverbs 27:6, Proverbs 27:7, Proverbs 27:8, Proverbs 27:9, Proverbs 27:10, Proverbs 27:11, Proverbs 27:12, Proverbs 27:13, Proverbs 27:14, Proverbs 27:15, Proverbs 27:16, Proverbs 27:17, Proverbs 27:18, Proverbs 27:19, Proverbs 27:20, Proverbs 27:21, Proverbs 27:22, Proverbs 27:23, Proverbs 27:24, Proverbs 27:25, Proverbs 27:26, Proverbs 27:27, Proverbs 28:1, Proverbs 28:2, Proverbs 28:3, Proverbs 28:4, Proverbs 28:5, Proverbs 28:6, Proverbs 28:7, Proverbs 28:8, Proverbs 28:9, Proverbs 28:10, Proverbs 28:11, Proverbs 28:12, Proverbs 28:13, Proverbs 28:14, Proverbs 28:15, Proverbs 28:16, Proverbs 28:17, Proverbs 28:18, Proverbs 28:19, Proverbs 28:20, Proverbs 28:21, Proverbs 28:22, Proverbs 28:23, Proverbs 28:24, Proverbs 28:25, Proverbs 28:26, Proverbs 28:27, Proverbs 28:28, Proverbs 29:1, Proverbs 29:2, Proverbs 29:3, Proverbs 29:4, Proverbs 29:5, Proverbs 29:6, Proverbs 29:7, Proverbs 29:8, Proverbs 29:9, Proverbs 29:10, Proverbs 29:11, Proverbs 29:12, Proverbs 29:13, Proverbs 29:14, Proverbs 29:15, Proverbs 29:16, Proverbs 29:17, Proverbs 29:18, Proverbs 29:19, Proverbs 29:20, Proverbs 29:21, Proverbs 29:22, Proverbs 29:23, Proverbs 29:24, Proverbs 29:25, Proverbs 29:26, Proverbs 29:27, Proverbs 30:1, Proverbs 30:2, Proverbs 30:3, Proverbs 30:4, Proverbs 30:5, Proverbs 30:6, Proverbs 30:7, Proverbs 30:8, Proverbs 30:9, Proverbs 30:10, Proverbs 30:11, Proverbs 30:12, Proverbs 30:13, Proverbs 30:14, Proverbs 30:15, Proverbs 30:16, Proverbs 30:17, Proverbs 30:18, Proverbs 30:19, Proverbs 30:20, Proverbs 30:21, Proverbs 30:22, Proverbs 30:23, Proverbs 30:24, Proverbs 30:25, Proverbs 30:26, Proverbs 30:27, Proverbs 30:28, Proverbs 30:29, Proverbs 30:30, Proverbs 30:31, Proverbs 30:32, Proverbs 30:33, Proverbs 31:1, Proverbs 31:2, Proverbs 31:3, Proverbs 31:4, Proverbs 31:5, Proverbs 31:6, Proverbs 31:7, Proverbs 31:8, Proverbs 31:9, Proverbs 31:10, Proverbs 31:11, Proverbs 31:12, Proverbs 31:13, Proverbs 31:14, Proverbs 31:15, Proverbs 31:16, Proverbs 31:17, Proverbs 31:18, Proverbs 31:19, Proverbs 31:20, Proverbs 31:21, Proverbs 31:22, Proverbs 31:23, Proverbs 31:24, Proverbs 31:25, Proverbs 31:26, Proverbs 31:27, Proverbs 31:28, Proverbs 31:29, Proverbs 31:30, Proverbs 31:31

## Proverbs 1:1

<sup>1</sup> दाऊद के पुत्र इस्माएल के राजा सुलेमान के नीतिवचनः

## Proverbs 1:2

<sup>2</sup> इनके द्वारा पढ़नेवाला बुद्धि और शिक्षा प्राप्त करे, और समझ की बातें समझें,

## Proverbs 1:3

<sup>3</sup> और विवेकपूर्ण जीवन निर्वह करने में प्रवीणता, और धर्म, न्याय और निष्पक्षता के विषय अनुशासन प्राप्त करे;

## Proverbs 1:4

<sup>4</sup> कि भोलों को चतुराई, और जवान को ज्ञान और विवेक मिले;

## Proverbs 1:5

<sup>5</sup> कि बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या बढ़ाए, और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए,

## Proverbs 1:6

<sup>6</sup> जिससे वे नीतिवचन और दृष्टान्त को, और बुद्धिमानों के वचन और उनके रहस्यों को समझें।

## Proverbs 1:7

<sup>7</sup> यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है; बुद्धि और शिक्षा को मूर्ख लोग ही तुच्छ जानते हैं।

## Proverbs 1:8

<sup>8</sup> हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा, और अपनी माता की शिक्षा को न तज़;

**Proverbs 1:9**

<sup>9</sup> क्योंकि वे मानों तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट, और तेरे गले के लिये माला होगी।

**Proverbs 1:10**

<sup>10</sup> हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे फुसलाएँ, तो उनकी बात न मानना।

**Proverbs 1:11**

<sup>11</sup> यदि वे कहें, “हमारे संग चल, कि हम हत्या करने के लिये घात लगाएँ, हम निर्दोषों पर वार करें;

**Proverbs 1:12**

<sup>12</sup> हम उन्हें जीवित निगल जाए, जैसे अधोलोक स्वस्थ लोगों को निगल जाता है, और उन्हें कब्र में पड़े मृतकों के समान बना दें।

**Proverbs 1:13**

<sup>13</sup> हमको सब प्रकार के अनमोल पदार्थ मिलेंगे, हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे;

**Proverbs 1:14**

<sup>14</sup> तू हमारा सहभागी हो जा, हम सभी का एक ही बदुआ हो,”

**Proverbs 1:15**

<sup>15</sup> तो, हे मेरे पुत्र तू उनके संग मार्ग में न चलना, वरन् उनकी डगर में पाँव भी न रखना;

**Proverbs 1:16**

<sup>16</sup> क्योंकि वे बुराई ही करने को दौड़ते हैं, और हत्या करने को फुर्ती करते हैं।

**Proverbs 1:17**

<sup>17</sup> क्योंकि पक्षी के देखते हुए जाल फैलाना व्यर्थ होता है;

**Proverbs 1:18**

<sup>18</sup> और ये लोग तो अपनी ही हत्या करने के लिये घात लगाते हैं, और अपने ही प्राणों की घात की ताक में रहते हैं।

**Proverbs 1:19**

<sup>19</sup> सब लालचियों की चाल ऐसी ही होती है; उनका प्राण लालच ही के कारण नाश हो जाता है।

**Proverbs 1:20**

<sup>20</sup> बुद्धि सङ्क में ऊँचे स्वर से बोलती है, और चौकों में प्रचार करती है;

**Proverbs 1:21**

<sup>21</sup> वह बाजारों की भीड़ में पुकारती है; वह नगर के फाटकों के प्रवेश पर खड़ी होकर, यह बोलती है:

**Proverbs 1:22**

<sup>22</sup> “हे अज्ञानियों, तुम कब तक अज्ञानता से प्रीति रखोगे? और हे ठट्ठा करनेवालों, तुम कब तक ठट्ठा करने से प्रसन्न रहोगे? हे मूर्खों, तुम कब तक ज्ञान से बैर रखोगे?

**Proverbs 1:23**

<sup>23</sup> तुम मेरी डाँट सुनकर मन फिराओ; सुनो, मैं अपनी आत्मा तुम्हारे लिये उण्डेल दूँगी; मैं तुम को अपने वचन बताऊँगी।

**Proverbs 1:24**

<sup>24</sup> मैंने तो पुकारा परन्तु तुम ने इन्कार किया, और मैंने हाथ फैलाया, परन्तु किसी ने ध्यान न दिया,

**Proverbs 1:25**

<sup>25</sup> वरन् तुम ने मेरी सारी सम्मति को अनसुना किया, और मेरी ताड़ना का मूल्य न जाना;

**Proverbs 1:26**

<sup>26</sup> इसलिए मैं भी तुम्हारी विपत्ति के समय हँसूँगी; और जब तुम पर भय आ पड़ेगा, तब मैं ठट्टा करूँगी।

**Proverbs 1:27**

<sup>27</sup> वरन् आँधी के समान तुम पर भय आ पड़ेगा, और विपत्ति बवण्डर के समान आ पड़ेगी, और तुम संकट और सकेती में फँसोगे, तब मैं ठट्टा करूँगी।

**Proverbs 1:28**

<sup>28</sup> उस समय वे मुझे पुकारेंगे, और मैं न सुनूँगी; वे मुझे यत्र से तो ढूँढ़ेंगे, परन्तु न पाएँगे।

**Proverbs 1:29**

<sup>29</sup> क्योंकि उन्होंने ज्ञान से बैर किया, और यहोवा का भय मानना उनको न भाया।

**Proverbs 1:30**

<sup>30</sup> उन्होंने मेरी सम्मति न चाही वरन् मेरी सब ताड़नाओं को तुच्छ जाना।

**Proverbs 1:31**

<sup>31</sup> इसलिए वे अपनी करनी का फल आप भोगेंगे, और अपनी युक्तियों के फल से अद्या जाएँगे।

**Proverbs 1:32**

<sup>32</sup> क्योंकि अज्ञानियों का भटक जाना, उनके घात किए जाने का कारण होगा, और निश्चिन्त रहने के कारण मूर्ख लोग नाश होंगे;

**Proverbs 1:33**

<sup>33</sup> परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर बसा रहेगा, और विपत्ति से निश्चिन्त होकर सुख से रहेगा।"

**Proverbs 2:1**

<sup>1</sup> हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े,

**Proverbs 2:2**

<sup>2</sup> और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचे;

**Proverbs 2:3**

<sup>3</sup> यदि तू प्रवीणता और समझ के लिये अति यत्र से पुकारे,

**Proverbs 2:4**

<sup>4</sup> और उसको चाँदी के समान ढूँढ़े, और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे;

**Proverbs 2:5**

<sup>5</sup> तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।

**Proverbs 2:6**

<sup>6</sup> क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं।

**Proverbs 2:7**

<sup>7</sup> वह सीधे लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिये वह ढाल ठहरता है।

**Proverbs 2:8**

<sup>8</sup> वह न्याय के पथों की देख-भाल करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है।

**Proverbs 2:9**

<sup>9</sup> तब तू धर्म और न्याय और सिधाई को, अर्थात् सब भली-भली चाल को समझ सकेगा;

**Proverbs 2:10**

<sup>10</sup> क्योंकि बुद्धि तो तेरे हृदय में प्रवेश करेगी, और ज्ञान तेरे प्राण को सुख देनेवाला होगा;

**Proverbs 2:11**

<sup>11</sup> विवेक तुझे सुरक्षित रखेगा; और समझ तेरी रक्षक होगी;

**Proverbs 2:12**

<sup>12</sup> ताकि वे तुझे बुराई के मार्ग से, और उलट-फेर की बातों के कहनेवालों से बचाएंगे,

**Proverbs 2:13**

<sup>13</sup> जो सिधाई के मार्ग को छोड़ देते हैं, ताकि अंधेरे मार्ग में चलें;

**Proverbs 2:14**

<sup>14</sup> जो बुराई करने से आनन्दित होते हैं, और दुष्ट जन की उलट-फेर की बातों में मग्न रहते हैं;

**Proverbs 2:15**

<sup>15</sup> जिनके चाल चलन टेढ़े-मेढ़े और जिनके मार्ग में कुटिलता है।

**Proverbs 2:16**

<sup>16</sup> बुद्धि और विवेक तुझे पराई स्त्री से बचाएँगे, जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है,

**Proverbs 2:17**

<sup>17</sup> और अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती, और जो अपने परमेश्वर की वाचा को भूल जाती है।

**Proverbs 2:18**

<sup>18</sup> उसका घर मृत्यु की ढलान पर है, और उसकी डगरें मरे हुओं के बीच पहुँचाती हैं;

**Proverbs 2:19**

<sup>19</sup> जो उसके पास जाते हैं, उनमें से कोई भी लौटकर नहीं आता; और न वे जीवन का मार्ग पाते हैं।

**Proverbs 2:20**

<sup>20</sup> इसलिए तू भले मनुष्यों के मार्ग में चल, और धर्मियों के पथ को पकड़े रह।

**Proverbs 2:21**

<sup>21</sup> क्योंकि धर्मी लोग देश में बसे रहेंगे, और खरे लोग ही उसमें बने रहेंगे।

**Proverbs 2:22**

<sup>22</sup> दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे, और विश्वासघाती उसमें से उखाड़े जाएँगे।

**Proverbs 3:1**

<sup>1</sup> हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;

**Proverbs 3:2**

<sup>2</sup> क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु बढ़ेगी, और तू अधिक कुशल से रहेगा।

**Proverbs 3:3**

<sup>3</sup> कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएँ; वरन् उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना।

**Proverbs 3:4**

<sup>4</sup> तब तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति प्रतिष्ठित होगा।

**Proverbs 3:5**

<sup>5</sup> तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।

**Proverbs 3:6**

<sup>6</sup> उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

**Proverbs 3:7**

<sup>7</sup> अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।

**Proverbs 3:8**

<sup>8</sup> ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियाँ पुष्ट रहेंगी।

**Proverbs 3:9**

<sup>9</sup> अपनी सम्पत्ति के द्वारा और अपनी भूमि की सारी पहली उपज देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना;

**Proverbs 3:10**

<sup>10</sup> इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमड़ता रहेगा।

**Proverbs 3:11**

<sup>11</sup> हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुँह न मोड़ना, और जब वह तुझे डॉटे, तब तू बुरा न मानना,

**Proverbs 3:12**

<sup>12</sup> जैसे पिता अपने प्रिय पुत्र को डाँटता है, वैसे ही यहोवा जिससे प्रेम रखता है उसको डाँटता है।

**Proverbs 3:13**

<sup>13</sup> क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे,

**Proverbs 3:14**

<sup>14</sup> जो उपलब्धि बुद्धि से प्राप्त होती है, वह चाँदी की प्राप्ति से बड़ी, और उसका लाभ शुद्ध सोने के लाभ से भी उत्तम है।

**Proverbs 3:15**

<sup>15</sup> वह बहुमूल्य रत्नों से अधिक मूल्यवान है, और जितनी वस्तुओं की तूलालसा करता है, उनमें से कोई भी उसके तुल्य न ठहरेगी।

**Proverbs 3:16**

<sup>16</sup> उसके दाहिने हाथ में दीर्घायु, और उसके बाएँ हाथ में धन और महिमा हैं।

**Proverbs 3:17**

<sup>17</sup> उसके मार्ग आनन्ददायक हैं, और उसके सब मार्ग कुशल के हैं।

**Proverbs 3:18**

<sup>18</sup> जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते हैं, उनके लिये वह जीवन का वृक्ष बनती है; और जो उसको पकड़े रहते हैं, वह धन्य हैं।

**Proverbs 3:19**

<sup>19</sup> यहोवा ने पृथ्वी की नींव बुद्धि ही से डाली; और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया।

**Proverbs 3:20**

<sup>20</sup> उसी के ज्ञान के द्वारा गहरे सागर फूट निकले, और आकाशमण्डल से ओस टपकती है।

**Proverbs 3:21**

<sup>21</sup> हे मेरे पुत्र, ये बातें तेरी दृष्टि की ओट न होने पाए; तू खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर,

**Proverbs 3:22**

<sup>22</sup> तब इनसे तुझे जीवन मिलेगा, और ये तेरे गले का हार बनेंगे।

**Proverbs 3:23**

<sup>23</sup> तब तू अपने मार्ग पर निडर चलेगा, और तेरे पाँव में ठेस न लगेगी।

**Proverbs 3:24**

<sup>24</sup> जब तू लेटेगा, तब भय न खाएगा, जब तू लेटेगा, तब सुख की नींद आएगी।

**Proverbs 3:25**

<sup>25</sup> अचानक आनेवाले भय से न डरना, और जब दुष्टों पर विपत्ति आ पड़े, तब न घबराना;

**Proverbs 3:26**

<sup>26</sup> क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा, और तेरे पाँव को फंदे में फँसने न देगा।

**Proverbs 3:27**

<sup>27</sup> जो भलाई के योग्य है उनका भला अवश्य करना, यदि ऐसा करना तेरी शक्ति में है।

**Proverbs 3:28**

<sup>28</sup> यदि तेरे पास देने को कुछ हो, तो अपने पड़ोसी से न कहना कि जा कल फिर आना, कल मैं तुझे ढूँगा।

**Proverbs 3:29**

<sup>29</sup> जब तेरा पड़ोसी तेरे पास निश्चिन्त रहता है, तब उसके विरुद्ध बुरी युक्ति न बाँधना।

**Proverbs 3:30**

<sup>30</sup> जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो, उससे अकारण मुकद्दमा खड़ा न करना।

**Proverbs 3:31**

<sup>31</sup> उपद्रवी पुरुष के विषय में डाह न करना, न उसकी सी चाल चलना;

**Proverbs 3:32**

<sup>32</sup> क्योंकि यहोवा कुटिल मनुष्य से घृणा करता है, परन्तु वह अपना भेद सीधे लोगों पर प्रगट करता है।

**Proverbs 3:33**

<sup>33</sup> दुष्ट के घर पर यहोवा का श्राप और धर्मियों के वासस्थान पर उसकी आशीष होती है।

**Proverbs 3:34**

<sup>34</sup> ठट्ठा करनेवालों का वह निश्चय ठट्ठा करता है; परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।

**Proverbs 3:35**

<sup>35</sup> बुद्धिमान महिमा को पाएँगे, परन्तु मूर्खों की बढ़ती अपमान ही की होगी।

**Proverbs 4:1**

<sup>1</sup> हे मेरे पुत्रों, पिता की शिक्षा सुनो, और समझ प्राप्त करने में मन लगाओ।

**Proverbs 4:2**

<sup>2</sup> क्योंकि मैंने तुम को उत्तम शिक्षा दी है; मेरी शिक्षा को न छोड़ो।

**Proverbs 4:3**

<sup>3</sup> देखो, मैं भी अपने पिता का पुत्र था, और माता का एकलौता दुलारा था,

**Proverbs 4:4**

<sup>4</sup> और मेरा पिता मुझे यह कहकर सिखाता था, “तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे; तू मेरी आज्ञाओं का पालन कर, तब जीवित रहेगा।

**Proverbs 4:5**

<sup>5</sup> बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर; उनको भूल न जाना, न मेरी बातों को छोड़ना।

**Proverbs 4:6**

<sup>6</sup> बुद्धि को न छोड़ और वह तेरी रक्षा करेगी; उससे प्रीति रख और वह तेरा पहरा देगी।

**Proverbs 4:7**

<sup>7</sup> बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिए उसकी प्राप्ति के लिये यत्न कर; अपना सब कुछ खर्च कर दे ताकि समझ को प्राप्त कर सके।

**Proverbs 4:8**

<sup>8</sup> उसकी बड़ाई कर, वह तुझको बढ़ाएगी; जब तू उससे लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी।

**Proverbs 4:9**

<sup>9</sup> वह तेरे सिर पर शोभायमान आभूषण बाँधेगी; और तुझे सुन्दर मुकुट देगी।”

**Proverbs 4:10**

<sup>10</sup> हे मेरे पुत्र, मेरी बातें सुनकर ग्रहण कर, तब तू बहुत वर्ष तक जीवित रहेगा।

**Proverbs 4:11**

<sup>11</sup> मैंने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया है; और सिधाई के पथ पर चलाया है।

**Proverbs 4:12**

<sup>12</sup> जिसमें चलने पर तुझे रोक टोक न होगी, और चाहे तू दौड़े, तो भी ठोकर न खाएगा।

**Proverbs 4:13**

<sup>13</sup> शिक्षा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे; उसकी रक्षा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है।

**Proverbs 4:14**

<sup>14</sup> दुष्टों की डगर में पाँव न रखना, और न बुरे लोगों के मार्ग पर चलना।

**Proverbs 4:15**

<sup>15</sup> उसे छोड़ दे, उसके पास से भी न चल, उसके निकट से मुड़कर आगे बढ़ जा।

**Proverbs 4:16**

<sup>16</sup> क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें, तो उनको नींद नहीं आती; और जब तक वे किसी को ठोकर न खिलाएँ, तब तक उन्हें नींद नहीं मिलती।

**Proverbs 4:17**

<sup>17</sup> क्योंकि वे दुष्टता की रोटी खाते, और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।

**Proverbs 4:18**

<sup>18</sup> परन्तु धर्मियों की चाल, भोर-प्रकाश के समान है, जिसकी चमक दोपहर तक बढ़ती जाती है।

**Proverbs 4:19**

<sup>19</sup> दुष्टों का मार्ग घोर अंधकारमय है; वे नहीं जानते कि वे किस से ठाकर खाते हैं।

**Proverbs 4:20**

<sup>20</sup> हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा।

**Proverbs 4:21**

<sup>21</sup> इनको अपनी आँखों से ओझल न होने दे; वरन् अपने मन में धारण कर।

**Proverbs 4:22**

<sup>22</sup> क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।

**Proverbs 4:23**

<sup>23</sup> सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

**Proverbs 4:24**

<sup>24</sup> टेढ़ी बात अपने मुँह से मत बोल, और चालबाजी की बातें कहना तुझ से दूर रहे।

**Proverbs 4:25**

<sup>25</sup> तेरी आँखें सामने ही की ओर लगी रहें, और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें।

**Proverbs 4:26**

<sup>26</sup> अपने पाँव रखने के लिये मार्ग को समतल कर, तब तेरे सब मार्ग ठीक रहेंगे।

**Proverbs 4:27**

<sup>27</sup> न तो दाहिनी ओर मुँड़ना, और न बाईं ओर; अपने पाँव को बुराई के मार्ग पर चलन से हटा ले।

**Proverbs 5:1**

<sup>1</sup> हे मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे, मेरी समझ की ओर कान लगा;

**Proverbs 5:2**

<sup>2</sup> जिससे तेरा विवेक सुरक्षित बना रहे, और तू ज्ञान की रक्षा करे।

**Proverbs 5:3**

<sup>3</sup> क्योंकि पराई स्त्री के होठों से मधु टपकता है, और उसकी बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं;

**Proverbs 5:4**

<sup>4</sup> परन्तु इसका परिणाम नागदौना के समान कड़वा और दोधारी तलवार के समान पैना होता है।

**Proverbs 5:5**

<sup>5</sup> उसके पाँव मृत्यु की ओर बढ़ते हैं; और उसके पग अधोलोक तक पहुँचते हैं।

**Proverbs 5:6**

<sup>6</sup> वह जीवन के मार्ग के विषय विचार नहीं करती; उसके चाल चलन में चंचलता है, परन्तु उसे वह स्वयं नहीं जानती।

**Proverbs 5:7**

<sup>7</sup> इसलिए अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातों से मुँह न मोड़ो।

**Proverbs 5:8**

<sup>8</sup> ऐसी स्त्री से दूर ही रह, और उसकी डेवढ़ी के पास भी न जाना;

**Proverbs 5:9**

<sup>9</sup> कहीं ऐसा न हो कि तू अपना यश औरों के हाथ, और अपना जीवन कूर जन के वश में कर दे;

**Proverbs 5:10**

<sup>10</sup> या पराए तेरी कमाई से अपना पेट भरें, और परदेशी मनुष्य तेरे परिश्रम का फल अपने घर में रखें;

**Proverbs 5:11**

<sup>11</sup> और तू अपने अन्तिम समय में जब तेरे शरीर का बल खत्म हो जाए तब कराह कर,

**Proverbs 5:12**

<sup>12</sup> तू यह कहेगा “मैंने शिक्षा से कैसा बैर किया, और डॉटनेवाले का कैसा तिरस्कार किया!

**Proverbs 5:13**

<sup>13</sup> मैंने अपने गुरुओं की बातें न मानीं और अपने सिखानेवालों की ओर ध्यान न लगाया।

**Proverbs 5:14**

<sup>14</sup> मैं सभा और मण्डली के बीच में पूर्णतः विनाश की कगार पर जा पड़ा।”

**Proverbs 5:15**

<sup>15</sup> तू अपने ही कुण्ड से पानी, और अपने ही कुएँ के सोते का जल पिया करना।

**Proverbs 5:16**

<sup>16</sup> क्या तेरे सोतों का पानी सड़क में, और तेरे जल की धारा चौकों में बह जाने पाए?

**Proverbs 5:17**

<sup>17</sup> यह केवल तेरे ही लिये रहे, और तेरे संग अनजानों के लिये न हो।

**Proverbs 5:18**

<sup>18</sup> तेरा सोता धन्य रहे; और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रह,

**Proverbs 5:19**

<sup>19</sup> वह तेरे लिए प्रिय हिरनी या सुन्दर सांभरनी के समान हो, उसके स्तन सर्वदा तुझे सन्तुष्ट रखें, और उसी का प्रेम नित्य तुझे मोहित करता रहे।

**Proverbs 5:20**

<sup>20</sup> हे मेरे पुत्र, तू व्यभिचारिणी पर क्यों मोहित हो, और पराई स्त्री को क्यों छाती से लगाए?

**Proverbs 5:21**

<sup>21</sup> क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं, और वह उसके सब मार्गों पर ध्यान करता है।

**Proverbs 5:22**

<sup>22</sup> दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मों से फँसेगा, और अपने ही पाप के बन्धनों में बन्धा रहेगा।

**Proverbs 5:23**

<sup>23</sup> वह अनुशासन का पालन न करने के कारण मर जाएगा, और अपनी ही मूर्खता के कारण भटकता रहेगा।

**Proverbs 6:1**

<sup>1</sup> हे मेरे पुत्र, यदि तू अपने पड़ोसी के जमानत का उत्तरदायी हुआ हो, अथवा परदेशी के लिये शपथ खाकर उत्तरदायी हुआ हो,

**Proverbs 6:2**

<sup>2</sup> तो तू अपने ही शपथ के वचनों में फँस जाएगा, और अपने ही मुँह के वचनों से पकड़ा जाएगा।

**Proverbs 6:3**

<sup>3</sup> इस स्थिति में, हे मेरे पुत्र एक काम कर और अपने आपको बचा लो, क्योंकि तू अपने पड़ोसी के हाथ में पड़ चुका है तो जा, और अपनी रिहाई के लिए उसको साष्टांग प्रणाम करके उससे विनती कर।

**Proverbs 6:4**

<sup>4</sup> तू न तो अपनी आँखों में नींद, और न अपनी पलकों में झपकी आने दे;

**Proverbs 6:5**

<sup>5</sup> और अपने आपको हिरनी के समान शिकारी के हाथ से, और चिड़िया के समान चिड़ीमार के हाथ से छुड़ा।

**Proverbs 6:6**

<sup>6</sup> हे आलसी, चीटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो जा।

**Proverbs 6:7**

<sup>7</sup> उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला,

**Proverbs 6:8**

<sup>8</sup> फिर भी वे अपना आहार धूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।

**Proverbs 6:9**

<sup>9</sup> हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नींद कब टूटेगी?

**Proverbs 6:10**

<sup>10</sup> थोड़ी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना,

**Proverbs 6:11**

<sup>11</sup> तब तेरा कंगालपन राह के लुटेरे के समान और तेरी घटी हथियार-बन्द के समान आ पड़ेगी।

**Proverbs 6:12**

<sup>12</sup> ओछे और अनर्थकारी को देखो, वह टेढ़ी-टेढ़ी बातें बकता फिरता है,

**Proverbs 6:13**

<sup>13</sup> वह नैन से सैन और पाँव से इशारा, और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है,

**Proverbs 6:14**

<sup>14</sup> उसके मन में उलट-फेर की बातें रहतीं, वह लगातार बुराई गढ़ता है और झगड़ा-रगड़ा उत्पन्न करता है।

**Proverbs 6:15**

<sup>15</sup> इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी, वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा, कि बचने का कोई उपाय न रहेगा।

**Proverbs 6:16**

<sup>16</sup> छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिनसे उसको घृणा है:

**Proverbs 6:17**

<sup>17</sup> अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लहू बहानेवाले हाथ,

**Proverbs 6:18**

<sup>18</sup> अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग से दौड़नेवाले पाँव,

**Proverbs 6:19**

<sup>19</sup> झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।

**Proverbs 6:20**

<sup>20</sup> हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा को न तज।

**Proverbs 6:21**

<sup>21</sup> उनको अपने हृदय में सदा गाँठ बाँधे रख; और अपने गले का हार बना ले।

**Proverbs 6:22**

<sup>22</sup> वह तेरे चलने में तेरी अगुआई, और सोते समय तेरी रक्षा, और जागते समय तुझे शिक्षा देगी।

**Proverbs 6:23**

<sup>23</sup> आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति, और अनुशासन के लिए दी जानेवाली डॉट जीवन का मार्ग है,

**Proverbs 6:24**

<sup>24</sup> वे तुझको अनैतिक स्त्री से और व्यभिचारिणी की चिकनी चुपड़ी बातों से बचाएगी।

**Proverbs 6:25**

<sup>25</sup> उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर; वह तुझे अपने कटाक्ष से फँसाने न पाए;

**Proverbs 6:26**

<sup>26</sup> क्योंकि वेश्यागमन के कारण मनुष्य रोटी के टुकड़ों का भिखारी हो जाता है, परन्तु व्यभिचारिणी अनमोल जीवन का अहेर कर लेती है।

**Proverbs 6:27**

<sup>27</sup> क्या हो सकता है कि कोई अपनी छाती पर आग रख ले; और उसके कपड़े न जलें?

**Proverbs 6:28**

<sup>28</sup> क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर चले, और उसके पाँव न झुलसें?

**Proverbs 6:29**

<sup>29</sup> जो पराई स्त्री के पास जाता है, उसकी दशा ऐसी है; वरन् जो कोई उसको छूएगा वह दण्ड से न बचेगा।

**Proverbs 6:30**

<sup>30</sup> जो चोर भूख के मारे अपना पेट भरने के लिये चोरी करे, उसको तो लोग तुच्छ नहीं जानते;

**Proverbs 6:31**

<sup>31</sup> फिर भी यदि वह पकड़ा जाए, तो उसको सात गुणा भर देना पड़ेगा; वरन् अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा।

**Proverbs 6:32**

<sup>32</sup> जो परस्तीगमन करता है वह निरा निरुद्ध है; जो ऐसा करता है, वह अपने प्राण को नाश करता है।

**Proverbs 6:33**

<sup>33</sup> उसको घायल और अपमानित होना पड़ेगा, और उसकी नामधारी कभी न मिटेगी।

**Proverbs 6:34**

<sup>34</sup> क्योंकि जलन से पुरुष बहुत ही क्रोधित हो जाता है, और जब वह बदला लेगा तब कोई दया नहीं दिखाएगा।

**Proverbs 6:35**

<sup>35</sup> तब मुआवजे में कुछ न लेगा, और चाहे तू उसको बहुत कुछ दे, तो भी वह न मानगा।

**Proverbs 7:1**

<sup>1</sup> हे मेरे पुत्र, मेरी बातों को माना कर, और मेरी आज्ञाओं को अपने मन में रख छोड़।

**Proverbs 7:2**

<sup>2</sup> मेरी आज्ञाओं को मान, इससे तू जीवित रहेगा, और मेरी शिक्षा को अपनी आँख की पुतली जान;

**Proverbs 7:3**

<sup>3</sup> उनको अपनी उँगलियों में बाँध, और अपने हृदय की पटिया पर लिख ले।

**Proverbs 7:4**

<sup>4</sup> बुद्धि से कह, “तू मेरी बहन है,” और समझ को अपनी कुटुम्बी बना;

**Proverbs 7:5**

<sup>5</sup> तब तू पराई स्त्री से बचेगा, जो चिकनी चुपड़ी बातें बोलती है।

**Proverbs 7:6**

<sup>6</sup> मैंने एक दिन अपने घर की खिड़की से, अर्थात् अपने झरोखे से झाँका,

**Proverbs 7:7**

<sup>7</sup> तब मैंने भोले लोगों में से एक निर्बुद्धि जवान को देखा;

**Proverbs 7:8**

<sup>8</sup> वह उस स्त्री के घर के कोने के पास की सड़क से गुजर रहा था, और उसने उसके घर का मार्ग लिया।

**Proverbs 7:9**

<sup>9</sup> उस समय दिन ढल गया, और संध्याकाल आ गया था, वरन् रात का घोर अंधकार छा गया था।

**Proverbs 7:10**

<sup>10</sup> और उससे एक स्त्री मिली, जिसका भेष वेश्या के समान था, और वह बड़ी धूर्त थी।

**Proverbs 7:11**

<sup>11</sup> वह शान्ति रहित और चंचल थी, और उसके पैर घर में नहीं टिकते थे;

**Proverbs 7:12**

<sup>12</sup> कभी वह सड़क में, कभी चौक में पाई जाती थी, और एक-एक कोने पर वह बाट जोहती थी।

**Proverbs 7:13**

<sup>13</sup> तब उसने उस जवान को पकड़कर चूमा, और निर्लज्जता की चेष्टा करके उससे कहा,

**Proverbs 7:14**

<sup>14</sup> “मैंने आज ही मेलबलि चढ़ाया और अपनी मन्त्रतें पूरी की;

**Proverbs 7:15**

<sup>15</sup> इसी कारण मैं तुझ से भेट करने को निकली, मैं तेरे दर्शन की खोजी थी, और अभी पाया है।

**Proverbs 7:16**

<sup>16</sup> मैंने अपने पलंग के बिछौने पर मिस के बेलबूटेवाले कपड़े बिछाए हैं;

**Proverbs 7:17**

<sup>17</sup> मैंने अपने बिछौने पर गम्धरस, अगर और दालचीनी छिड़की है।

**Proverbs 7:18**

<sup>18</sup> इसलिए अब चल हम प्रेम से भोर तक जी बहलाते रहें; हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित रहें।

**Proverbs 7:19**

<sup>19</sup> क्योंकि मेरा पति घर में नहीं है; वह दूर देश को चला गया है;

**Proverbs 7:20**

<sup>20</sup> वह चाँदी की थैली ले गया है; और पूर्णमासी को लौट आएगा।”

**Proverbs 7:21**

<sup>21</sup> ऐसी ही लुभानेवाली बातें कह कहकर, उसने उसको फँसा लिया; और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से उसको अपने वश में कर लिया।

**Proverbs 7:22**

<sup>22</sup> वह तुरन्त उसके पीछे हो लिया, जैसे बैल कसाई-खाने को, या हिरन फंदे में कदम रखता है।

**Proverbs 7:23**

<sup>23</sup> अन्त में उस जवान का कलेजा तीर से बेधा जाएगा; वह उस चिड़िया के समान है जो फंदे की ओर वेग से उड़ती है और नहीं जानती कि उससे उसके प्राण जाएँगे।

**Proverbs 7:24**

<sup>24</sup> अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो, और मेरी बातों पर मन लगाओ।

**Proverbs 7:25**

<sup>25</sup> तेरा मन ऐसी स्त्री के मार्ग की ओर न फिरे, और उसकी डगरों में भूलकर भी न जाना;

**Proverbs 7:26**

<sup>26</sup> क्योंकि बहुत से लोग उसके द्वारा मारे गए हैं; उसके घात किए हुओं की एक बड़ी संख्या होगी।

**Proverbs 7:27**

<sup>27</sup> उसका घर अधोलोक का मार्ग है, वह मृत्यु के घर में पहुँचाता है।

**Proverbs 8:1**

<sup>1</sup> क्या बुद्धि नहीं पुकारती है? क्या समझ ऊँचे शब्द से नहीं बोलती है?

**Proverbs 8:2**

<sup>2</sup> बुद्धि तो मार्ग के ऊँचे स्थानों पर, और चौराहों में खड़ी होती है;

**Proverbs 8:3**

<sup>3</sup> फाटकों के पास नगर के पैठाव में, और द्वारों ही में वह ऊँचे स्वर से कहती है,

**Proverbs 8:4**

<sup>4</sup> “हे लोगों, मैं तुम को पुकारती हूँ, और मेरी बातें सब मनुष्यों के लिये हैं।

**Proverbs 8:5**

<sup>5</sup> हे भोलों, चतुराई सीखो; और हे मूर्खों, अपने मन में समझ लो

**Proverbs 8:6**

<sup>6</sup> सुनो, क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूँगी, और जब मुँह खोलूँगी, तब उससे सीधी बातें निकलेंगी;

**Proverbs 8:7**

<sup>7</sup> क्योंकि मुझसे सच्चाई की बातों का वर्णन होगा; दुष्टता की बातों से मुझ को धृणा आती है।

**Proverbs 8:8**

<sup>8</sup> मेरे मुँह की सब बातें धर्म की होती हैं, उनमें से कोई टेढ़ी या उलट-फेर की बात नहीं निकलती है।

**Proverbs 8:9**

<sup>9</sup> समझवाले के लिये वे सब सहज, और ज्ञान प्राप्त करनेवालों के लिये अति सीधी हैं।

**Proverbs 8:10**

<sup>10</sup> चाँदी नहीं, मेरी शिक्षा ही को चुन लो, और उत्तम कुन्दन से बढ़कर ज्ञान को ग्रहण करो।

**Proverbs 8:11**

<sup>11</sup> क्योंकि बुद्धि, बहुमूल्य रत्नों से भी अच्छी है, और सारी मनभावनी वस्तुओं में कोई भी उसके तुल्य नहीं है।

**Proverbs 8:12**

<sup>12</sup> मैं जो बुद्धि हूँ, और मैं चतुराई में वास करती हूँ, और ज्ञान और विवेक को प्राप्त करती हूँ।

**Proverbs 8:13**

<sup>13</sup> यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है। घमण्ड और अहंकार, बुरी चाल से, और उलट-फेर की बात से मैं बैर रखती हूँ।

**Proverbs 8:14**

<sup>14</sup> उत्तम युक्ति, और खरी बुद्धि मेरी ही है, मुझ में समझ है, और पराक्रम भी मेरा है।

**Proverbs 8:15**

<sup>15</sup> मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते हैं, और अधिकारी धर्म से शासन करते हैं;

**Proverbs 8:16**

<sup>16</sup> मेरे ही द्वारा राजा, हाकिम और पृथ्वी के सब न्यायी शासन करते हैं।

**Proverbs 8:17**

<sup>17</sup> जो मुझसे प्रेम रखते हैं, उनसे मैं भी प्रेम रखती हूँ, और जो मुझ को यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।

**Proverbs 8:18**

<sup>18</sup> धन और प्रतिष्ठा, शाश्वत धन और धार्मिकता मेरे पास हैं।

**Proverbs 8:19**

<sup>19</sup> मेरा फल शुद्ध सोने से, वरन् कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चाँदी से अच्छी है।

**Proverbs 8:20**

<sup>20</sup> मैं धर्म के मार्ग में, और न्याय की डगरों के बीच में चलती हूँ,

**Proverbs 8:21**

<sup>21</sup> जिससे मैं अपने प्रेमियों को धन-सम्पत्ति का भागी करूँ,  
और उनके भण्डारों को भर दूँ।

**Proverbs 8:22**

<sup>22</sup> “यहोवा ने मुझे काम करने के आरम्भ में, वरन् अपने  
प्राचीनकाल के कामों से भी पहले उत्पन्न किया।

**Proverbs 8:23**

<sup>23</sup> मैं सदा से वरन् आदि ही से पृथ्वी की सृष्टि से पहले ही से  
ठहराई गई हूँ।

**Proverbs 8:24**

<sup>24</sup> जब न तो गहरा सागर था, और न जल के सोते थे, तब ही से  
मैं उत्पन्न हुई।

**Proverbs 8:25**

<sup>25</sup> जब पहाड़ और पहाड़ियाँ स्थिर न की गई थीं, तब ही से मैं  
उत्पन्न हुई।

**Proverbs 8:26**

<sup>26</sup> जब यहोवा ने न तो पृथ्वी और न मैदान, न जगत की धूलि  
के परमाणु बनाए थे, इनसे पहले मैं उत्पन्न हुई।

**Proverbs 8:27**

<sup>27</sup> जब उसने आकाश को स्थिर किया, तब मैं वहाँ थी, जब  
उसने गहरे सागर के ऊपर आकाशमण्डल ठहराया,

**Proverbs 8:28**

<sup>28</sup> जब उसने आकाशमण्डल को ऊपर से स्थिर किया, और  
गहरे सागर के सोते फूटने लगे,

**Proverbs 8:29**

<sup>29</sup> जब उसने समुद्र की सीमा ठहराई, कि जल उसकी आज्ञा  
का उल्लंघन न कर सके, और जब वह पृथ्वी की नींव की डोरी  
लगाता था,

**Proverbs 8:30**

<sup>30</sup> तब मैं प्रधान कारीगर के समान उसके पास थी, और  
प्रतिदिन मैं उसकी प्रसन्नता थी, और हर समय उसके सामने  
आनन्दित रहती थी।

**Proverbs 8:31**

<sup>31</sup> मैं उसकी बसाई हुई पृथ्वी से प्रसन्न थी और मेरा सुख  
मनुष्यों की संगति से होता था।

**Proverbs 8:32**

<sup>32</sup> “इसलिए अब हे मेरे पुत्रों, मेरी सुनो; क्या ही धन्य हैं वे जो  
मेरे मार्ग को पकड़े रहते हैं।

**Proverbs 8:33**

<sup>33</sup> शिक्षा को सुनो, और बुद्धिमान हो जाओ, उसको अनसुना  
न करो।

**Proverbs 8:34**

<sup>34</sup> क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता, वरन् मेरी डेवढ़ी  
पर प्रतिदिन खड़ा रहता, और मेरे द्वारों के खम्भों के पास दृष्टि  
लगाए रहता है।

**Proverbs 8:35**

<sup>35</sup> क्योंकि जो मुझे पाता है, वह जीवन को पाता है, और यहोवा  
उससे प्रसन्न होता है।

**Proverbs 8:36**

<sup>36</sup> परन्तु जो मुझे ढूँढ़ने में विफल होता है, वह अपने ही पर उपद्रव करता है; जितने मुझसे बैर रखते, वे मृत्यु से प्रीति रखते हैं।”

**Proverbs 9:1**

<sup>1</sup> बुद्धि ने अपना घर बनाया और उसके सातों खम्मे गढ़े हुए हैं।

**Proverbs 9:2**

<sup>2</sup> उसने भोज के लिए अपने पशु काटे, अपने दाखमधु में मसाला मिलाया और अपनी मेज लगाई है।

**Proverbs 9:3**

<sup>3</sup> उसने अपनी सेविकाओं को आमन्त्रित करने भेजा है; और वह नगर के सबसे ऊँचे स्थानों से पुकारती है,

**Proverbs 9:4**

<sup>4</sup> “जो कोई भोला है वह मुड़कर यहीं आए!” और जो निर्बुद्धि है, उससे वह कहती है,

**Proverbs 9:5**

<sup>5</sup> “आओ, मेरी रोटी खाओ, और मेरे मसाला मिलाए हुए दाखमधु को पीओ।

**Proverbs 9:6**

<sup>6</sup> मूर्खोंका साथ छोड़ो, और जीवित रहो, समझ के मार्ग में सीधे चलो।”

**Proverbs 9:7**

<sup>7</sup> जो ठट्ठा करनेवाले को शिक्षा देता है, अपमानित होता है, और जो दुष्ट जन को डॉट्ता है वह कलंकित होता है।

**Proverbs 9:8**

<sup>8</sup> ठट्ठा करनेवाले को न डॉट, ऐसा न हो कि वह तुझ से बैर रखे, बुद्धिमान को डॉट, वह तो तुझ से प्रेम रखेगा।

**Proverbs 9:9**

<sup>9</sup> बुद्धिमान को शिक्षा दे, वह अधिक बुद्धिमान होगा; धर्म को चिता दे, वह अपनी विद्या बढ़ाएगा।

**Proverbs 9:10**

<sup>10</sup> यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है, और परमपवित्र परमेश्वर को जानना ही समझ है।

**Proverbs 9:11**

<sup>11</sup> मेरे द्वारा तो तेरी आयु बढ़ेगी, और तेरे जीवन के वर्ष अधिक होंगे।

**Proverbs 9:12**

<sup>12</sup> यदि तू बुद्धिमान है, तो बुद्धि का फल तू ही भोगेगा; और यदि तू ठट्ठा करे, तो दण्ड केवल तू ही भोगेगा।

**Proverbs 9:13**

<sup>13</sup> मूर्खता बक-बक करनेवाली स्त्री के समान है; वह तो निर्बुद्धि है, और कुछ नहीं जानती।

**Proverbs 9:14**

<sup>14</sup> वह अपने घर के द्वार में, और नगर के ऊँचे स्थानों में अपने आसन पर बैठी हुई

**Proverbs 9:15**

<sup>15</sup> वह उन लोगों को जो अपने मार्गों पर सीधे-सीधे चलते हैं यह कहकर पुकारती है,

**Proverbs 9:16**

<sup>16</sup> “जो कोई भोला है, वह मुड़कर यहीं आए;” जो निर्बुद्धि है, उससे वह कहती है,

**Proverbs 9:17**

<sup>17</sup> “चोरी का पानी मीठा होता है, और लुके-छिपे की रोटी अच्छी लगती है।”

**Proverbs 9:18**

<sup>18</sup> और वह नहीं जानता है, कि वहाँ मेरे हुए पड़े हैं, और उस स्त्री के निमंत्रित अधोलोक के निचले स्थानों में पहुँचे हैं।

**Proverbs 10:1**

<sup>1</sup> सुलैमान के नीतिवचन। बुद्धिमान सन्तान से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख सन्तान के कारण माता को शोक होता है।

**Proverbs 10:2**

<sup>2</sup> दुष्टों के रखे हुए धन से लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव होता है।

**Proverbs 10:3**

<sup>3</sup> धर्मी को यहोवा भूखा मरने नहीं देता, परन्तु दुष्टों की अभिलाषा वह पूरी होने नहीं देता।

**Proverbs 10:4**

<sup>4</sup> जो काम में ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है, परन्तु कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं।

**Proverbs 10:5**

<sup>5</sup> बुद्धिमान सन्तान धूपकाल में फसल बटोरता है, परन्तु जो सन्तान कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है, वह लज्जा का कारण होता है।

**Proverbs 10:6**

<sup>6</sup> धर्मी पर बहुत से आशीर्वाद होते हैं, परन्तु दुष्टों के मुँह में उपद्रव छिपा रहता है।

**Proverbs 10:7**

<sup>7</sup> धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं, परन्तु दुष्टों का नाम मिट जाता है।

**Proverbs 10:8**

<sup>8</sup> जो बुद्धिमान है, वह आज्ञाओं को स्वीकार करता है, परन्तु जो बकवादी मूर्ख है, उसका नाश होता है।

**Proverbs 10:9**

<sup>9</sup> जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है।

**Proverbs 10:10**

<sup>10</sup> जो नैन से सैन करके बुरे काम के लिए इशारा करता है उससे औरों को दुःख होता है, और जो बकवादी मूर्ख है, उसका नाश होगा।

**Proverbs 10:11**

<sup>11</sup> धर्मी का मुँह तो जीवन का सोता है, परन्तु दुष्टों के मुँह में उपद्रव छिपा रहता है।

**Proverbs 10:12**

<sup>12</sup> बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम से सब अपराध ढँप जाते हैं।

**Proverbs 10:13**

<sup>13</sup> समझवालों के वचनों में बुद्धि पाई जाती है, परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिये कोड़ा है।

**Proverbs 10:14**

<sup>14</sup> बुद्धिमान लोग ज्ञान का संग्रह करते हैं, परन्तु मूर्ख के बोलने से विनाश होता है।

**Proverbs 10:15**

<sup>15</sup> धनी का धन उसका दृढ़ नगर है, परन्तु कंगाल की निर्धनता उसके विनाश का कारण है।

**Proverbs 10:16**

<sup>16</sup> धर्मी का परिश्रम जीवन की ओर ले जाता है; परन्तु दुष्ट का लाभ पाप की ओर ले जाता है।

**Proverbs 10:17**

<sup>17</sup> जो शिक्षा पर चलता वह जीवन के मार्ग पर है, परन्तु जो डाँट से मुँह मोड़ता, वह भटकता है।

**Proverbs 10:18**

<sup>18</sup> जो बैर को छिपा रखता है, वह झूठ बोलता है, और जो झूठी निन्दा फैलाता है, वह मूर्ख है।

**Proverbs 10:19**

<sup>19</sup> जहाँ बहुत बातें होती हैं, वहाँ अपराध भी होता है, परन्तु जो अपने मुँह को बन्द रखता है वह बुद्धि से काम करता है।

**Proverbs 10:20**

<sup>20</sup> धर्मी के वचन तो उत्तम चाँदी हैं; परन्तु दुष्टों का मन बहुत हलका होता है।

**Proverbs 10:21**

<sup>21</sup> धर्मी के वचनों से बहुतों का पालन-पोषण होता है, परन्तु मूर्ख लोग बुद्धिहीनता के कारण मर जाते हैं।

**Proverbs 10:22**

<sup>22</sup> धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलता।

**Proverbs 10:23**

<sup>23</sup> मूर्ख को तो महापाप करना हँसी की बात जान पड़ती है, परन्तु समझवाले व्यक्ति के लिए बुद्धि प्रसन्नता का विषय है।

**Proverbs 10:24**

<sup>24</sup> दुष्ट जन जिस विपत्ति से डरता है, वह उस पर आ पड़ती है, परन्तु धर्मियों की लालसा पूरी होती है।

**Proverbs 10:25**

<sup>25</sup> दुष्ट जन उस बवण्डर के समान है, जो गुजरते ही लोप हो जाता है परन्तु धर्मी सदा स्थिर रहता है।

**Proverbs 10:26**

<sup>26</sup> जैसे दाँत को सिरका, और आँख को धुआँ, वैसे आलसी उनको लगता है जो उसको कहीं भेजते हैं।

**Proverbs 10:27**

<sup>27</sup> यहोवा के भय मानने से आयु बढ़ती है, परन्तु दुष्टों का जीवन थोड़े ही दिनों का होता है।

**Proverbs 10:28**

<sup>28</sup> धर्मियों को आशा रखने में आनन्द मिलता है, परन्तु दुष्टों की आशा टूट जाती है।

**Proverbs 10:29**

<sup>29</sup> यहोवा खरे मनुष्य का गढ़ ठहरता है, परन्तु अनर्थकारियों का विनाश होता है।

**Proverbs 10:30**

<sup>30</sup> धर्मी सदा अटल रहेगा, परन्तु दुष्ट पृथ्वी पर बसने न पाएँगे।

**Proverbs 10:31**

<sup>31</sup> धर्म के मुँह से बुद्धि टपकती है, पर उलट-फेर की बात कहनेवाले की जीभ काटी जाएगी।

**Proverbs 10:32**

<sup>32</sup> धर्म ग्रहणयोग्य बात समझकर बोलता है, परन्तु दुष्टों के मुँह से उलट-फेर की बातें निकलती हैं।

**Proverbs 11:1**

<sup>1</sup> छल के तराजू से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह पूरे बटखरे से प्रसन्न होता है।

**Proverbs 11:2**

<sup>2</sup> जब अभिमान होता, तब अपमान भी होता है, परन्तु नम्र लोगों में बुद्धि होती है।

**Proverbs 11:3**

<sup>3</sup> सीधे लोग अपनी खराई से अगुआई पाते हैं, परन्तु विश्वासघाती अपने कपट से नाश होते हैं।

**Proverbs 11:4**

<sup>4</sup> कोप के दिन धन से तो कुछ लाभ नहीं होता, परन्तु धर्म मृत्यु से भी बचाता है।

**Proverbs 11:5**

<sup>5</sup> खरे मनुष्य का मार्ग धर्म के कारण सीधा होता है, परन्तु दुष्ट अपनी दुष्टता के कारण गिर जाता है।

**Proverbs 11:6**

<sup>6</sup> सीधे लोगों का बचाव उनके धर्म के कारण होता है, परन्तु विश्वासघाती लोग अपनी ही दुष्टता में फँसते हैं।

**Proverbs 11:7**

<sup>7</sup> जब दुष्ट मरता, तब उसकी आशा टूट जाती है, और अधर्मी की आशा व्यर्थ होती है।

**Proverbs 11:8**

<sup>8</sup> धर्म विपत्ति से छूट जाता है, परन्तु दुष्ट उसी विपत्ति में पड़ जाता है।

**Proverbs 11:9**

<sup>9</sup> भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात से बिगाड़ता है, परन्तु धर्म लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं।

**Proverbs 11:10**

<sup>10</sup> जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं, परन्तु जब दुष्ट नाश होते, तब जय जयकार होता है।

**Proverbs 11:11**

<sup>11</sup> सीधे लोगों के आशीर्वाद से नगर की बढ़ती होती है, परन्तु दुष्टों के मुँह की बात से वह ढाया जाता है।

**Proverbs 11:12**

<sup>12</sup> जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है, वह निर्बुद्धि है, परन्तु समझदार पुरुष चुपचाप रहता है।

**Proverbs 11:13**

<sup>13</sup> जो चुगली करता फिरता वह भेद प्रगट करता है, परन्तु विश्वासयोग्य मनुष्य बात को छिपा रखता है।

**Proverbs 11:14**

<sup>14</sup> जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।

**Proverbs 11:15**

<sup>15</sup> जो परदेशी का उत्तरदायी होता है, वह बड़ा दुःख उठाता है, परन्तु जो जमानत लेने से घृणा करता, वह निर रहता है।

**Proverbs 11:16**

<sup>16</sup> अनुग्रह करनेवाली स्त्री प्रतिष्ठा नहीं खोती है, और उग्र लोग धन को नहीं खोते।

**Proverbs 11:17**

<sup>17</sup> कृपालु मनुष्य अपना ही भला करता है, परन्तु जो कूर है, वह अपनी ही देह को दुःख देता है।

**Proverbs 11:18**

<sup>18</sup> दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है, परन्तु जो धर्म का बीज बोता, उसको निश्चय फल मिलता है।

**Proverbs 11:19**

<sup>19</sup> जो धर्म में दृढ़ रहता, वह जीवन पाता है, परन्तु जो बुराई का पीछा करता, वह मर जाएगा।

**Proverbs 11:20**

<sup>20</sup> जो मन के टेढ़े हैं, उनसे यहोवा को घृणा आती है, परन्तु वह खरी चालवालों से प्रसन्न रहता है।

**Proverbs 11:21**

<sup>21</sup> निश्चय जानो, बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा, परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा।

**Proverbs 11:22**

<sup>22</sup> जो सुन्दर स्त्री विवेक नहीं रखती, वह धूधन में सोने की नस्य पहने हुए सूअर के समान है।

**Proverbs 11:23**

<sup>23</sup> धर्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है; परन्तु दुष्टों की आशा का फल क्रोध ही होता है।

**Proverbs 11:24**

<sup>24</sup> ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, फिर भी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इससे उनकी घटती ही होती है।

**Proverbs 11:25**

<sup>25</sup> उदार प्राणी हष्ट-पुष्ट हो जाता है, और जो औरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी।

**Proverbs 11:26**

<sup>26</sup> जो अपना अनाज जमाखोरी करता है, उसको लोग श्राप देते हैं, परन्तु जो उसे बेच देता है, उसको आशीर्वाद दिया जाता है।

**Proverbs 11:27**

<sup>27</sup> जो यत्र से भलाई करता है वह दूसरों की प्रसन्नता खोजता है, परन्तु जो दूसरे की बुराई का खोजी होता है, उसी पर बुराई आ पड़ती है।

**Proverbs 11:28**

<sup>28</sup> जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह सूखे पत्ते के समान गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते के समान लहलहाते हैं।

**Proverbs 11:29**

<sup>29</sup> जो अपने घराने को दुःख देता, उसका भाग वायु ही होगा, और मूर्ख बुद्धिमान का दास हो जाता है।

**Proverbs 11:30**

<sup>30</sup> धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है, और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है।

**Proverbs 11:31**

<sup>31</sup> देख, धर्मी को पृथ्वी पर फल मिलेगा, तो निश्चय है कि दुष्ट और पापी को भी मिलेगा।

**Proverbs 12:1**

<sup>1</sup> जो शिक्षा पाने से प्रीति रखता है वह ज्ञान से प्रीति रखता है, परन्तु जो डॉट से बैर रखता, वह पशु के समान मूर्ख है।

**Proverbs 12:2**

<sup>2</sup> भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है, परन्तु बुरी युक्ति करनेवाले को वह दोषी ठहराता है।

**Proverbs 12:3**

<sup>3</sup> कोई मनुष्य दुष्टता के कारण स्थिर नहीं होता, परन्तु धर्मियों की जड़ उखड़ने की नहीं।

**Proverbs 12:4**

<sup>4</sup> भली स्त्री अपने पति का मुकुट है, परन्तु जो लज्जा के काम करती वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण होती है।

**Proverbs 12:5**

<sup>5</sup> धर्मियों की कल्पनाएँ न्याय ही की होती हैं, परन्तु दुष्टों की युक्तियाँ छल की हैं।

**Proverbs 12:6**

<sup>6</sup> दुष्टों की बातचीत हत्या करने के लिये घात लगाने के समान होता है, परन्तु सीधे लोग अपने मुँह की बात के द्वारा छुड़ानेवाले होते हैं।

**Proverbs 12:7**

<sup>7</sup> जब दुष्ट लोग उलटे जाते हैं तब वे रहते ही नहीं, परन्तु धर्मियों का घर स्थिर रहता है।

**Proverbs 12:8**

<sup>8</sup> मनुष्य की बुद्धि के अनुसार उसकी प्रशंसा होती है, परन्तु कुटिल तुच्छ जाना जाता है।

**Proverbs 12:9**

<sup>9</sup> जिसके पास खाने को रोटी तक नहीं, पर अपने बारे में डींग मारता है, उससे दास रखनेवाला साधारण मनुष्य ही उत्तम है।

**Proverbs 12:10**

<sup>10</sup> धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी निर्दयता है।

**Proverbs 12:11**

<sup>11</sup> जो अपनी भूमि को जोतता, वह पेट भर खाता है, परन्तु जो निकम्मों की संगति करता, वह निर्बुद्धि ठहरता है।

**Proverbs 12:12**

<sup>12</sup> दुष्ट जन बुरे लोगों के लूट के माल की अभिलाषा करते हैं, परन्तु धर्मियों की जड़ें हरी भरी रहती हैं।

**Proverbs 12:13**

<sup>13</sup> बुरा मनुष्य अपने दुर्वचनों के कारण फंदे में फँसता है, परन्तु धर्मी संकट से निकास पाता है।

**Proverbs 12:14**

<sup>14</sup> सज्जन अपने वचनों के फल के द्वारा भलाई से तृप्त होता है, और जैसी जिसकी करनी वैसी उसकी भरनी होती है।

**Proverbs 12:15**

<sup>15</sup> मूर्ख को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है।

**Proverbs 12:16**

<sup>16</sup> मूर्ख की रिस तुरन्त प्रगट हो जाती है, परन्तु विवेकी मनुष्य अपमान को अनदेखा करता है।

**Proverbs 12:17**

<sup>17</sup> जो सच बोलता है, वह धर्म प्रगट करता है, परन्तु जो झूठी साक्षी देता, वह छल प्रगट करता है।

**Proverbs 12:18**

<sup>18</sup> ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोच विचार का बोलना तलवार के समान चुभता है, परन्तु बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते हैं।

**Proverbs 12:19**

<sup>19</sup> सच्चाई सदा बनी रहेगी, परन्तु झूठ पल भर का होता है।

**Proverbs 12:20**

<sup>20</sup> बुरी युक्ति करनेवालों के मन में छल रहता है, परन्तु मेल की युक्ति करनेवालों को आनन्द होता है।

**Proverbs 12:21**

<sup>21</sup> धर्मी को हानि नहीं होती है, परन्तु दुष्ट लोग सारी विपत्ति में झूब जाते हैं।

**Proverbs 12:22**

<sup>22</sup> झूठों से यहोवा को घृणा आती है परन्तु जो ईमानदारी से काम करते हैं, उनसे वह प्रसन्न होता है।

**Proverbs 12:23**

<sup>23</sup> विवेकी मनुष्य ज्ञान को प्रगट नहीं करता है, परन्तु मूर्ख अपने मन की मूर्खता ऊँचे शब्द से प्रचार करता है।

**Proverbs 12:24**

<sup>24</sup> कामकाजी लोग प्रभुता करते हैं, परन्तु आलसी बेगार में पकड़े जाते हैं।

**Proverbs 12:25**

<sup>25</sup> उदास मन दब जाता है, परन्तु भली बात से वह आनन्दित होता है।

**Proverbs 12:26**

<sup>26</sup> धर्मी अपने पड़ोसी की अगुआई करता है, परन्तु दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण भटक जाते हैं।

**Proverbs 12:27**

<sup>27</sup> आलसी अहेर का पीछा नहीं करता, परन्तु कामकाजी को अनमोल वस्तु मिलती है।

**Proverbs 12:28**

<sup>28</sup> धर्म के मार्ग में जीवन मिलता है, और उसके पथ में मृत्यु का पता भी नहीं।

**Proverbs 13:1**

<sup>1</sup> बुद्धिमान पुत्र पिता की शिक्षा सुनता है, परन्तु ठट्ठा करनेवाला घुड़की को भी नहीं सुनता।

**Proverbs 13:2**

<sup>2</sup> सज्जन अपनी बातों के कारण उत्तम वस्तु खाने पाता है, परन्तु विश्वासघाती लोगों का पेट उपद्रव से भरता है।

**Proverbs 13:3**

<sup>3</sup> जो अपने मुँह की चौकसी करता है, वह अपने प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो गाल बजाता है उसका विनाश हो जाता है।

**Proverbs 13:4**

<sup>4</sup> आलसी का प्राण लालसा तो करता है, परन्तु उसको कुछ नहीं मिलता, परन्तु कामकाजी हष्ट-पुष्ट हो जाते हैं।

**Proverbs 13:5**

<sup>5</sup> धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है, परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण होता है और लज्जित हो जाता है।

**Proverbs 13:6**

<sup>6</sup> धर्म खरी चाल चलनेवाले की रक्षा करता है, परन्तु पापी अपनी दुष्टता के कारण उलट जाता है।

**Proverbs 13:7**

<sup>7</sup> कोई तो धन बटोरता, परन्तु उसके पास कुछ नहीं रहता, और कोई धन उड़ा देता, फिर भी उसके पास बहुत रहता है।

**Proverbs 13:8**

<sup>8</sup> धनी मनुष्य के प्राण की छुड़ौती उसके धन से होती है, परन्तु निर्धन ऐसी घुड़की को सुनता भी नहीं।

**Proverbs 13:9**

<sup>9</sup> धर्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहती है, परन्तु दुष्टों का दिया बुझ जाता है।

**Proverbs 13:10**

<sup>10</sup> अहंकार से केवल झगड़े होते हैं, परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है।

**Proverbs 13:11**

<sup>11</sup> धोखे से कमाया धन जल्दी घटता है, परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता, उसकी बढ़ती होती है।

**Proverbs 13:12**

<sup>12</sup> जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तो मन निराश होता है, परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब जीवन का वृक्ष लगता है।

**Proverbs 13:13**

<sup>13</sup> जो वचन को तुच्छ जानता, उसका नाश हो जाता है, परन्तु आज्ञा के डरवैये को अच्छा फल मिलता है।

**Proverbs 13:14**

<sup>14</sup> बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फंदों से बच सकते हैं।

**Proverbs 13:15**

<sup>15</sup> सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है।

**Proverbs 13:16**

<sup>16</sup> विवेकी मनुष्य ज्ञान से सब काम करता है, परन्तु मूर्ख अपनी मूर्खता फैलाता है।

**Proverbs 13:17**

<sup>17</sup> दुष्ट दूत बुराई में फँसता है, परन्तु विश्वासयोग्य दूत मिलाप करवाता है।

**Proverbs 13:18**

<sup>18</sup> जो शिक्षा को अनसुनी करता वह निर्धन हो जाता है और अपमान पाता है, परन्तु जो डाँट को मानता, उसकी महिमा होती है।

**Proverbs 13:19**

<sup>19</sup> लालसा का पूरा होना तो प्राण को मीठा लगता है, परन्तु बुराई से हटना, मूर्खों के प्राण को बुरा लगता है।

**Proverbs 13:20**

<sup>20</sup> बुद्धिमानों की संगति कर, तब तू भी बुद्धिमान हो जाएगा, परन्तु मूर्खों का साथी नाश हो जाएगा।

**Proverbs 13:21**

<sup>21</sup> विपत्ति पापियों के पीछे लगी रहती है, परन्तु धर्मियों को अच्छा फल मिलता है।

**Proverbs 13:22**

<sup>22</sup> भला मनुष्य अपने नाती-पोतों के लिये सम्पत्ति छोड़ जाता है, परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्म के लिये रखी जाती है।

**Proverbs 13:23**

<sup>23</sup> निर्बल लोगों को खेती-बारी से बहुत भोजनवस्तु मिलता है, परन्तु अन्याय से उसको हड्डप लिया जाता है।

**Proverbs 13:24**

<sup>24</sup> जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उससे प्रेम रखता, वह यत्र से उसको शिक्षा देता है।

**Proverbs 13:25**

<sup>25</sup> धर्मी पेट भर खाने पाता है, परन्तु दुष्ट भूखे ही रहते हैं।

**Proverbs 14:1**

<sup>1</sup> हर बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है, पर मूर्ख स्त्री उसको अपने ही हाथों से ढां देती है।

**Proverbs 14:2**

<sup>2</sup> जो सिधाई से चलता वह यहोवा का भय माननेवाला है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता वह उसको तुच्छ जाननेवाला ठहरता है।

**Proverbs 14:3**

<sup>3</sup> मूर्ख के मुँह में गर्व का अंकुर है, परन्तु बुद्धिमान लोग अपने वचनों के द्वारा रक्षा पाते हैं।

**Proverbs 14:4**

<sup>4</sup> जहाँ बैल नहीं, वहाँ गौशाला स्वच्छ तो रहती है, परन्तु बैल के बल से अनाज की बढ़ती होती है।

**Proverbs 14:5**

<sup>5</sup> सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलता, परन्तु झूठा साक्षी झूठी बातें उड़ाता है।

**Proverbs 14:6**

<sup>6</sup> ठट्ठा करनेवाला बुद्धि को ढूँढ़ता, परन्तु नहीं पाता, परन्तु समझवाले को ज्ञान सहज से मिलता है।

**Proverbs 14:7**

<sup>7</sup> मूर्ख से अलग हो जा, तू उससे ज्ञान की बात न पाएगा।

**Proverbs 14:8**

<sup>8</sup> विवेकी मनुष्य की बुद्धि अपनी चाल को समझना है, परन्तु मूर्खों की मूर्खता छल करना है।

**Proverbs 14:9**

<sup>9</sup> मूर्ख लोग पाप का अंगीकार करने को ठट्ठा जानते हैं, परन्तु सीधे लोगों के बीच अनुग्रह होता है।

**Proverbs 14:10**

<sup>10</sup> मन अपना ही दुःख जानता है, और परदेशी उसके आनन्द में हाथ नहीं डाल सकता।

**Proverbs 14:11**

<sup>11</sup> दुष्टों के घर का विनाश हो जाता है, परन्तु सीधे लोगों के तम्बू में बढ़ती होती है।

**Proverbs 14:12**

<sup>12</sup> ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

**Proverbs 14:13**

<sup>13</sup> हँसी के समय भी मन उदास हो सकता है, और आनन्द के अन्त में शोक हो सकता है।

**Proverbs 14:14**

<sup>14</sup> जो बेर्इमान है, वह अपनी चाल चलन का फल भोगता है, परन्तु भला मनुष्य आप ही आप सन्तुष्ट होता है।

**Proverbs 14:15**

<sup>15</sup> भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु विवेकी मनुष्य समझ बूझकर चलता है।

**Proverbs 14:16**

<sup>16</sup> बुद्धिमान डरकर बुराई से हटता है, परन्तु मूर्ख ढीठ होकर चेतावनी की उपेक्षा करता है।

**Proverbs 14:17**

<sup>17</sup> जो झट क्रोध करे, वह मूर्खता का काम करेगा, और जो बुरी युक्तियाँ निकालता है, उससे लोग बैर रखते हैं।

**Proverbs 14:18**

<sup>18</sup> भोलों का भाग मूर्खता ही होता है, परन्तु विवेकी मनुष्यों को ज्ञानरूपी मुकुट बौधा जाता है।

**Proverbs 14:19**

<sup>19</sup> बुरे लोग भलों के सम्मुख, और दुष्ट लोग धर्मी के फाटक पर दण्डवत् करेंगे।

**Proverbs 14:20**

<sup>20</sup> निर्धन का पड़ोसी भी उससे घृणा करता है, परन्तु धनी के अनेक प्रेमी होते हैं।

**Proverbs 14:21**

<sup>21</sup> जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता, वह पाप करता है, परन्तु जो दीन लोगों पर अनुग्रह करता, वह धन्य होता है।

**Proverbs 14:22**

<sup>22</sup> जो बुरी युक्ति निकालते हैं, क्या वे भ्रम में नहीं पड़ते? परन्तु भली युक्ति निकालनेवालों से करुणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है।

**Proverbs 14:23**

<sup>23</sup> परिश्रम से सदा लाभ होता है, परन्तु बकवाद करने से केवल घटती होती है।

**Proverbs 14:24**

<sup>24</sup> बुद्धिमानों का धन उनका मुकुट ठहरता है, परन्तु मूर्ख से केवल मूर्खता ही उत्पन्न होती है।

**Proverbs 14:25**

<sup>25</sup> सच्चा साक्षी बहुतों के प्राण बचाता है, परन्तु जो झूठी बातें उड़ाया करता है उससे धोखा ही होता है।

**Proverbs 14:26**

<sup>26</sup> यहोवा के भय में दृढ़ भरोसा है, और यह उसकी सन्तानों के लिए शरणस्थान होगा।

**Proverbs 14:27**

<sup>27</sup> यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फंदों से बच जाते हैं।

**Proverbs 14:28**

<sup>28</sup> राजा की महिमा प्रजा की बहुतायत से होती है, परन्तु जहाँ प्रजा नहीं, वहाँ हाकिम नाश हो जाता है।

**Proverbs 14:29**

<sup>29</sup> जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है वह बड़ा समझवाला है, परन्तु जो अधीर होता है, वह मूर्खता को बढ़ाता है।

**Proverbs 14:30**

<sup>30</sup> शान्त मन, तन का जीवन है, परन्तु ईर्ष्या से हड्डियाँ भी गल जाती हैं।

**Proverbs 14:31**

<sup>31</sup> जो कंगाल पर अंधेर करता, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है, परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी महिमा करता है।

**Proverbs 14:32**

<sup>32</sup> दुष्ट मनुष्य बुराई करता हुआ नाश हो जाता है, परन्तु धर्म को मृत्यु के समय भी शरण मिलती है।

**Proverbs 14:33**

<sup>33</sup> समझवाले के मन में बुद्धि वास किए रहती है, परन्तु मूर्ख मनुष्य बुद्धि के विषय में कुछ भी नहीं जानता।

**Proverbs 14:34**

<sup>34</sup> जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है।

**Proverbs 14:35**

<sup>35</sup> जो कर्मचारी बुद्धि से काम करता है उस पर राजा प्रसन्न होता है, परन्तु जो लज्जा के काम करता, उस पर वह रोष करता है।

**Proverbs 15:1**

<sup>1</sup> कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है।

**Proverbs 15:2**

<sup>2</sup> बुद्धिमान ज्ञान का ठीक बखान करते हैं, परन्तु मूर्खों के मुँह से मूर्खता उबल आती है।

**Proverbs 15:3**

<sup>3</sup> यहोवा की आँखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं।

**Proverbs 15:4**

<sup>4</sup> शान्ति देनेवाली बात जीवन-वृक्ष है, परन्तु उलट-फेर की बात से आत्मा दुःखित होती है।

**Proverbs 15:5**

<sup>5</sup> मूर्ख अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है, परन्तु जो डॉट को मानता, वह विवेकी हो जाता है।

**Proverbs 15:6**

<sup>6</sup> धर्म के घर में बहुत धन रहता है, परन्तु दुष्ट के कमाई में दुःख रहता है।

**Proverbs 15:7**

<sup>7</sup> बुद्धिमान लोग बातें करने से ज्ञान को फैलाते हैं, परन्तु मूर्खों का मन ठीक नहीं रहता।

**Proverbs 15:8**

<sup>8</sup> दुष्ट लोगों के बलिदान से यहोवा धूपा करता है, परन्तु वह सीधे लोगों की प्रार्थना से प्रसन्न होता है।

**Proverbs 15:9**

<sup>9</sup> दुष्ट के चाल चलन से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो धर्म का पीछा करता उससे वह प्रेम रखता है।

**Proverbs 15:10**

<sup>10</sup> जो मार्ग को छोड़ देता, उसको बड़ी ताड़ना मिलती है, और जो डॉट से बैर रखता, वह अवश्य मर जाता है।

**Proverbs 15:11**

<sup>11</sup> जबकि अधोलोक और विनाशलोक यहोवा के सामने खुले रहते हैं, तो निश्चय मनुष्यों के मन भी।

**Proverbs 15:12**

<sup>12</sup> ठट्ठा करनेवाला डॉटे जाने से प्रसन्न नहीं होता, और न वह बुद्धिमानों के पास जाता है।

**Proverbs 15:13**

<sup>13</sup> मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा जाती है, परन्तु मन के दुःख से आत्मा निराश होती है।

**Proverbs 15:14**

<sup>14</sup> समझनेवाले का मन ज्ञान की खोज में रहता है, परन्तु मूर्ख लोग मूर्खता से पेट भरते हैं।

**Proverbs 15:15**

<sup>15</sup> दुःखियारे के सब दिन दुःख भरे रहते हैं, परन्तु जिसका मन प्रसन्न रहता है, वह मानो नित्य भोज में जाता है।

**Proverbs 15:16**

<sup>16</sup> घबराहट के साथ बहुत रखे हुए धन से, यहोवा के भय के साथ थोड़ा ही धन उत्तम है,

**Proverbs 15:17**

<sup>17</sup> प्रेमवाले घर में सागपात का भोजन, बैरवाले घर में स्वादिष्ट माँस खाने से उत्तम है।

**Proverbs 15:18**

<sup>18</sup> क्रोधी पुरुष झगड़ा मचाता है, परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है, वह मुकद्दमों को दबा देता है।

**Proverbs 15:19**

<sup>19</sup> आलसी का मार्ग काँटों से रुक्खा हुआ होता है, परन्तु सीधे लोगों का मार्ग राजमार्ग ठहरता है।

**Proverbs 15:20**

<sup>20</sup> बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है, परन्तु मूर्ख अपनी माता को तुच्छ जानता है।

**Proverbs 15:21**

<sup>21</sup> निर्बुद्धि को मूर्खता से आनन्द होता है, परन्तु समझवाला मनुष्य सीधी चाल चलता है।

**Proverbs 15:22**

<sup>22</sup> बिना सम्मति की कल्पनाएँ निष्फल होती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से सफलता मिलती है।

**Proverbs 15:23**

<sup>23</sup> सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है, और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है!

**Proverbs 15:24**

<sup>24</sup> विवेकी के लिये जीवन का मार्ग ऊपर की ओर जाता है, इस रीति से वह अधोलोक में पड़ने से बच जाता है।

**Proverbs 15:25**

<sup>25</sup> यहोवा अहंकारियों के घर को ढा देता है, परन्तु विधवा की सीमाओं को अटल रखता है।

**Proverbs 15:26**

<sup>26</sup> बुरी कल्पनाएँ यहोवा को घिनौनी लगती हैं, परन्तु शुद्ध जन के वचन मनभावने हैं।

**Proverbs 15:27**

<sup>27</sup> लालची अपने घराने को दुःख देता है, परन्तु घूस से घृणा करनेवाला जीवित रहता है।

**Proverbs 15:28**

<sup>28</sup> धर्मी मन में सोचता है कि क्या उत्तर द्वैं, परन्तु दुष्टों के मुँह से बुरी बातें उबल आती हैं।

**Proverbs 15:29**

<sup>29</sup> यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, परन्तु धर्मियों की प्रार्थना सुनता है।

**Proverbs 15:30**

<sup>30</sup> आँखों की चमक से मन को आनन्द होता है, और अच्छे समाचार से हङ्कियाँ पुष्ट होती हैं।

**Proverbs 15:31**

<sup>31</sup> जो जीवनदायी डॉट कान लगाकर सुनता है, वह बुद्धिमानों के संग ठिकाना पाता है।

**Proverbs 15:32**

<sup>32</sup> जो शिक्षा को अनसुनी करता, वह अपने प्राण को तुच्छ जानता है, परन्तु जो डॉट को सुनता, वह बुद्धि प्राप्त करता है।

**Proverbs 15:33**

<sup>33</sup> यहोवा के भय मानने से बुद्धि की शिक्षा प्राप्त होती है, और महिमा से पहले नम्रता आती है।

**Proverbs 16:1**

<sup>1</sup> मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है, परन्तु मुँह से कहना यहोवा की ओर से होता है।

**Proverbs 16:2**

<sup>2</sup> मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है, परन्तु यहोवा मन को तौलता है।

**Proverbs 16:3**

<sup>3</sup> अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इससे तेरी कल्पनाएँ सिद्ध होंगी।

**Proverbs 16:4**

<sup>4</sup> यहोवा ने सब वस्तुएँ विशेष उद्देश्य के लिये बनाई हैं, वरन् दुष्ट को भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया है।

**Proverbs 16:5**

<sup>5</sup> सब मन के घमण्डियों से यहोवा घृणा करता है; मैं दृढ़ता से कहता हूँ, ऐसे लोग निर्दोष न ठहरेंगे।

**Proverbs 16:6**

<sup>6</sup> अधर्म का प्रायश्चित्त कृपा, और सच्चाई से होता है, और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं।

**Proverbs 16:7**

<sup>7</sup> जब किसी का चाल चलन यहोवा को भावता है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उससे मेल कराता है।

**Proverbs 16:8**

<sup>8</sup> अन्याय के बड़े लाभ से, न्याय से थोड़ा ही प्राप्त करना उत्तम है।

**Proverbs 16:9**

<sup>9</sup> मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है।

**Proverbs 16:10**

<sup>10</sup> राजा के मुँह से दैवीवाणी निकलती है, न्याय करने में उससे चूक नहीं होती।

**Proverbs 16:11**

<sup>11</sup> सच्चा तराजू और पलड़े यहोवा की ओर से होते हैं, ऐली में जितने बटखरे हैं, सब उसी के बनवाए हुए हैं।

**Proverbs 16:12**

<sup>12</sup> दुष्टता करना राजाओं के लिये धृणित काम है, क्योंकि उनकी गद्दी धर्म ही से स्थिर रहती है।

**Proverbs 16:13**

<sup>13</sup> धर्म की बात बोलनेवालों से राजा प्रसन्न होता है, और जो सीधी बातें बोलता है, उससे वह प्रेम रखता है।

**Proverbs 16:14**

<sup>14</sup> राजा का क्रोध मृत्यु के दूत के समान है, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य उसको ठंडा करता है।

**Proverbs 16:15**

<sup>15</sup> राजा के मुख की चमक में जीवन रहता है, और उसकी प्रसन्नता बरसात के अन्त की घटा के समान होती है।

**Proverbs 16:16**

<sup>16</sup> बुद्धि की प्राप्ति शुद्ध सोने से क्या ही उत्तम है! और समझ की प्राप्ति चाँदी से बढ़कर योग्य है।

**Proverbs 16:17**

<sup>17</sup> बुराई से हटना धर्मियों के लिये उत्तम मार्ग है, जो अपने चाल चलन की चौकसी करता, वह अपने प्राण की भी रक्षा करता है।

**Proverbs 16:18**

<sup>18</sup> विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है।

**Proverbs 16:19**

<sup>19</sup> घमण्डियों के संग लूट बाँट लेने से, दीन लोगों के संग नम्र भाव से रहना उत्तम है।

**Proverbs 16:20**

<sup>20</sup> जो वचन पर मन लगाता, वह कल्याण पाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता, वह धन्य होता है।

**Proverbs 16:21**

<sup>21</sup> जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझवाला कहलाता है, और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।

**Proverbs 16:22**

<sup>22</sup> जिसमें बुद्धि है, उसके लिये वह जीवन का स्रोत है, परन्तु मूर्ख का दण्ड स्वयं उसकी मूर्खता है।

**Proverbs 16:23**

<sup>23</sup> बुद्धिमान का मन उसके मुँह पर भी बुद्धिमानी प्रगट करता है, और उसके वचन में विद्या रहती है।

**Proverbs 16:24**

<sup>24</sup> मनभावने वचन मधु भरे छत्ते के समान प्राणों को मीठे लगते, और हङ्कियों को हरी-भरी करते हैं।

**Proverbs 16:25**

<sup>25</sup> ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

**Proverbs 16:26**

<sup>26</sup> परिश्रमी की लालसा उसके लिये परिश्रम करती है, उसकी भूख तो उसको उभारती रहती है।

**Proverbs 16:27**

<sup>27</sup> अधर्मी मनुष्य बुराई की युक्ति निकालता है, और उसके वचनों से आग लग जाती है।

**Proverbs 16:28**

<sup>28</sup> टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है, और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों में भी फूट करा देता है।

**Proverbs 16:29**

<sup>29</sup> उपद्रवी मनुष्य अपने पड़ोसी को फुसलाकर कुमार्ग पर चलाता है।

**Proverbs 16:30**

<sup>30</sup> आँख मूँदनेवाला छल की कल्पनाएँ करता है, और होंठ दबानेवाला बुराई करता है।

**Proverbs 16:31**

<sup>31</sup> पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं; वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं।

**Proverbs 16:32**

<sup>32</sup> विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर को जीत लेने से उत्तम है।

**Proverbs 16:33**

<sup>33</sup> चिट्ठी डाली जाती तो है, परन्तु उसका निकलना यहोवा ही की ओर से होता है।

**Proverbs 17:1**

<sup>1</sup> चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस घर की अपेक्षा उत्तम है, जो मेलबलि-पशुओं से भरा हो, परन्तु उसमें झगड़े-रगड़े हों।

**Proverbs 17:2**

<sup>2</sup> बुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करेगा, और उस पुत्र के भाइयों के बीच भागी होगा।

**Proverbs 17:3**

<sup>3</sup> चाँदी के लिये कुठाली, और सोने के लिये भट्टी होती है, परन्तु मनों को यहोवा जाँचता है।

**Proverbs 17:4**

<sup>4</sup> कुकर्मी अनर्थ बात को ध्यान देकर सुनता है, और झूठा मनुष्य दुष्टा की बात की ओर कान लगाता है।

**Proverbs 17:5**

<sup>5</sup> जो निर्धन को उपहास में उड़ाता है, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है; और जो किसी की विपत्ति पर हँसता है, वह निर्दोष नहीं ठहरेगा।

**Proverbs 17:6**

<sup>6</sup> बूढ़ों की शोभा उनके नाती पोते हैं; और बाल-बच्चों की शोभा उनके माता-पिता है।

**Proverbs 17:7**

<sup>7</sup> मूर्ख के मुख से उत्तम बात फबती नहीं, और इससे अधिक प्रधान के मुख से झूठी बात नहीं फबती।

**Proverbs 17:8**

<sup>8</sup> घूस देनेवाला व्यक्ति घूस को मोह लेनेवाला मणि समझता है; ऐसा पुरुष जिधर फिरता, उधर उसका काम सफल होता है।

**Proverbs 17:9**

<sup>9</sup> जो दूसरे के अपराध को ढाँप देता है, वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार बार करता है, वह परम मित्रों में भी फृट करा देता है।

**Proverbs 17:10**

<sup>10</sup> एक घुड़की समझनेवाले के मन में जितनी गड़ जाती है, उतना सौ बार मार खाना मूर्ख के मन में नहीं गड़ता।

**Proverbs 17:11**

<sup>11</sup> बुरा मनुष्य दंगे ही का यत्न करता है, इसलिए उसके पास क्रूर दूत भेजा जाएगा।

**Proverbs 17:12**

<sup>12</sup> बच्चा-छीनी-हुई-रीछनी से मिलना, मूर्खता में छूबे हुए मूर्ख से मिलने से बेहतर है।

**Proverbs 17:13**

<sup>13</sup> जो कोई भलाई के बदले में बुराई करे, उसके घर से बुराई दूर न होगी।

**Proverbs 17:14**

<sup>14</sup> झगड़े का आरम्भ बाँध के छेद के समान है, झगड़ा बढ़ने से पहले उसको छोड़ देना उचित है।

**Proverbs 17:15**

<sup>15</sup> जो दोषी को निर्दोष, और जो निर्दोष को दोषी ठहराता है, उन दोनों से यहोवा धृणा करता है।

**Proverbs 17:16**

<sup>16</sup> बुद्धि मोल लेने के लिये मूर्ख अपने हाथ में दाम क्यों लिए है? वह उसे चाहता ही नहीं।

**Proverbs 17:17**

<sup>17</sup> मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है।

**Proverbs 17:18**

<sup>18</sup> निर्बुद्धि मनुष्य बाध्यकारी वायदे करता है, और अपने पड़ोसी के कर्ज का उत्तरदायी होता है।

**Proverbs 17:19**

<sup>19</sup> जो झगड़े-रगड़े में प्रीति रखता, वह अपराध करने से भी प्रीति रखता है, और जो अपने फाटक को बड़ा करता, वह अपने विनाश के लिये यत्न करता है।

**Proverbs 17:20**

<sup>20</sup> जो मन का टेढ़ा है, उसका कल्याण नहीं होता, और उलट-फेर की बात करनेवाला विपत्ति में पड़ता है।

**Proverbs 17:21**

<sup>21</sup> जो मूर्ख को जन्म देता है वह उससे दुःख ही पाता है; और मूर्ख के पिता को आनन्द नहीं होता।

**Proverbs 17:22**

<sup>22</sup> मन का आनन्द अच्छी औषधि है, परन्तु मन के टूटने से हड्डियाँ सूख जाती हैं।

**Proverbs 17:23**

<sup>23</sup> दुष्ट जन न्याय बिगाड़ने के लिये, अपनी गाँठ से घूस निकालता है।

**Proverbs 17:24**

<sup>24</sup> बुद्धि समझनेवाले के सामने ही रहती है, परन्तु मूर्ख की आँखें पृथ्वी के दूर-दूर देशों में लगी रहती हैं।

**Proverbs 17:25**

<sup>25</sup> मूर्ख पुत्र से पिता उदास होता है, और उसकी जननी को शोक होता है।

**Proverbs 17:26**

<sup>26</sup> धर्मी को दण्ड देना, और प्रधानों को खराई के कारण पिटवाना, दोनों काम अच्छे नहीं हैं।

**Proverbs 17:27**

<sup>27</sup> जो सम्भलकर बोलता है, वह ज्ञानी ठहरता है; और जिसकी आत्मा शान्त रहती है, वही समझनेवाला पुरुष ठहरता है।

**Proverbs 17:28**

<sup>28</sup> मूर्ख भी जब चुप रहता है, तब बुद्धिमान गिना जाता है; और जो अपना मुँह बन्द रखता वह समझनेवाला गिना जाता है।

**Proverbs 18:1**

<sup>1</sup> जो दूसरों से अलग हो जाता है, वह अपनी ही इच्छा पूरी करने के लिये ऐसा करता है, और सब प्रकार की खरी बुद्धि से बैर करता है।

**Proverbs 18:2**

<sup>2</sup> मूर्ख का मन समझ की बातों में नहीं लगता, वह केवल अपने मन की बात प्रगट करना चाहता है।

**Proverbs 18:3**

<sup>3</sup> जहाँ दुष्टता आती, वहाँ अपमान भी आता है; और निरादर के साथ निन्दा आती है।

**Proverbs 18:4**

<sup>4</sup> मनुष्य के मुँह के वचन गहरे जल होते हैं; बुद्धि का सोत बहती धारा के समान हैं।

**Proverbs 18:5**

<sup>5</sup> दुष्ट का पक्ष करना, और धर्मी का हक्क मारना, अच्छा नहीं है।

**Proverbs 18:6**

<sup>6</sup> बात बढ़ाने से मूर्ख मुकद्दमा खड़ा करता है, और अपने को मार खाने के योग्य दिखाता है।

**Proverbs 18:7**

<sup>7</sup> मूर्ख का विनाश उसकी बातों से होता है, और उसके वचन उसके प्राण के लिये फंदे होते हैं।

**Proverbs 18:8**

<sup>8</sup> कानाफूसी करनेवाले के वचन स्वादिष्ट भोजन के समान लगते हैं; वे पेट में पच जाते हैं।

**Proverbs 18:9**

<sup>9</sup> जो काम में आलस करता है, वह बिगाड़नेवाले का भाई ठहरता है।

**Proverbs 18:10**

<sup>10</sup> यहोवा का नाम दृढ़ गढ़ है; धर्मी उसमें भागकर सब दुर्घटनाओं से बचता है।

**Proverbs 18:11**

<sup>11</sup> धनी का धन उसकी दृष्टि में शक्तिशाली नगर है, और उसकी कल्पना ऊँची शहरपनाह के समान है।

**Proverbs 18:12**

<sup>12</sup> नाश होने से पहले मनुष्य के मन में घमण्ड, और महिमा पाने से पहले नम्रता होती है।

**Proverbs 18:13**

<sup>13</sup> जो बिना बात सुने उत्तर देता है, वह मूर्ख ठहरता है, और उसका अनादर होता है।

**Proverbs 18:14**

<sup>14</sup> रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से सम्भलता है; परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन सह सकता है?

**Proverbs 18:15**

<sup>15</sup> समझवाले का मन ज्ञान प्राप्त करता है; और बुद्धिमान ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं।

**Proverbs 18:16**

<sup>16</sup> भेट मनुष्य के लिये मार्ग खोल देती है, और उसे बड़े लोगों के सामने पहुँचाती है।

**Proverbs 18:17**

<sup>17</sup> मुकद्दमे में जो पहले बोलता, वही सच्चा जान पड़ता है, परन्तु बाद में दूसरे पक्षवाला आकर उसे जाँच लेता है।

**Proverbs 18:18**

<sup>18</sup> चिठ्ठी डालने से झगड़े बन्द होते हैं, और बलवन्तों की लड़ाई का अन्त होता है।

**Proverbs 18:19**

<sup>19</sup> चिठ्ठे हुए भाई को मनाना दृढ़ नगर के ले लेने से कठिन होता है, और झगड़े राजभवन के बैंडों के समान हैं।

**Proverbs 18:20**

<sup>20</sup> मनुष्य का पेट मुँह की बातों के फल से भरता है; और बोलने से जो कुछ प्राप्त होता है उससे वह तृप्त होता है।

**Proverbs 18:21**

<sup>21</sup> जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।

**Proverbs 18:22**

<sup>22</sup> जिसने स्त्री ब्याह ली, उसने उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुप्रह उस पर हुआ है।

**Proverbs 18:23**

<sup>23</sup> निर्धन गिड़गिड़ाकर बोलता है, परन्तु धनी कड़ा उत्तर देता है।

**Proverbs 18:24**

<sup>24</sup> मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।

**Proverbs 19:1**

<sup>1</sup> जो निर्धन खराई से चलता है, वह उस मूर्ख से उत्तम है जो टेढ़ी बातें बोलता है।

**Proverbs 19:2**

<sup>2</sup> मनुष्य का ज्ञानरहित रहना अच्छा नहीं, और जो उतावली से दौड़ता है वह चूक जाता है।

**Proverbs 19:3**

<sup>3</sup> मूर्खता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है, और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़ने लगता है।

**Proverbs 19:4**

<sup>4</sup> धनी के तो बहुत मित्र हो जाते हैं, परन्तु कंगाल के मित्र उससे अलग हो जाते हैं।

**Proverbs 19:5**

<sup>5</sup> झूठा साक्षी निर्देष नहीं ठहरता, और जो झूठ बोला करता है, वह न बचेगा।

**Proverbs 19:6**

<sup>6</sup> उदार मनुष्य को बहुत से लोग मना लेते हैं, और दानी पुरुष का मित्र सब कोई बनता है।

**Proverbs 19:7**

<sup>7</sup> जब निर्धन के सब भाई उससे बैर रखते हैं, तो निश्चय है कि उसके मित्र उससे दूर हो जाएँ। वह बातें करते हुए उनका पीछा करता है, परन्तु उनको नहीं पाता।

**Proverbs 19:8**

<sup>8</sup> जो बुद्धि प्राप्त करता, वह अपने प्राण को प्रेमी ठहराता है; और जो समझ को रखे रहता है उसका कल्याण होता है।

**Proverbs 19:9**

<sup>9</sup> झूठा साक्षी निर्देष नहीं ठहरता, और जो झूठ बोला करता है, वह नाश होता है।

**Proverbs 19:10**

<sup>10</sup> जब सुख में रहना मूर्ख को नहीं फबता, तो हाकिमों पर दास का प्रभुता करना कैसे फबे!

**Proverbs 19:11**

<sup>11</sup> जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह विलम्ब से क्रोध करता है, और अपराध को भुलाना उसको शोभा देता है।

**Proverbs 19:12**

<sup>12</sup> राजा का क्रोध सिंह की गर्जन के समान है, परन्तु उसकी प्रसन्नता घास पर की ओस के तुल्य होती है।

**Proverbs 19:13**

<sup>13</sup> मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति है, और झगड़ालू पत्नी सदा टपकने वाले जल के समान हैं।

**Proverbs 19:14**

<sup>14</sup> घर और धन पुरखाओं के भाग से, परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही से मिलती है।

**Proverbs 19:15**

<sup>15</sup> आलस से भारी नींद आ जाती है, और जो प्राणी डिलाई से काम करता, वह भूखा ही रहता है।

**Proverbs 19:16**

<sup>16</sup> जो आज्ञा को मानता, वह अपने प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो अपने चाल चलन के विषय में निश्चिन्त रहता है, वह मर जाता है।

**Proverbs 19:17**

<sup>17</sup> जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा।

**Proverbs 19:18**

<sup>18</sup> जब तक आशा है तब तक अपने पुत्र की ताड़ना कर, जान बूझकर उसको मार न डाल।

**Proverbs 19:19**

<sup>19</sup> जो बड़ा क्रोधी है, उसे दण्ड उठाने दे; क्योंकि यदि तू उसे बचाए, तो बारम्बार बचाना पड़ेगा।

**Proverbs 19:20**

<sup>20</sup> सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, ताकि तू अपने अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे।

**Proverbs 19:21**

<sup>21</sup> मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है।

**Proverbs 19:22**

<sup>22</sup> मनुष्य में निष्ठा सर्वोत्तम गुण है, और निर्धन जन झूठ बोलनेवाले से बेहतर है।

**Proverbs 19:23**

<sup>23</sup> यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है; और उसका भय माननेवाला ठिकाना पाकर सुखी रहता है; उस पर विपत्ति नहीं पड़ने की।

**Proverbs 19:24**

<sup>24</sup> आलसी अपना हाथ थाली में डालता है, परन्तु अपने मुँह तक कौर नहीं उठाता।

**Proverbs 19:25**

<sup>25</sup> ठट्ठा करनेवाले को मार, इससे भोला मनुष्य समझदार हो जाएगा; और समझवाले को डाँट, तब वह अधिक ज्ञान पाएगा।

**Proverbs 19:26**

<sup>26</sup> जो पुत्र अपने बाप को उजाइता, और अपनी माँ को भगा देता है, वह अपमान और लज्जा का कारण होगा।

**Proverbs 19:27**

<sup>27</sup> हे मेरे पुत्र, यदि तू शिक्षा को सुनना छोड़ दे, तो तू ज्ञान की बातों से भटक जाएगा।

**Proverbs 19:28**

<sup>28</sup> अधर्मी साक्षी न्याय को उपहास में उड़ाता है, और दुष्ट लोग अनर्थ काम निगल लेते हैं।

**Proverbs 19:29**

<sup>29</sup> ठट्ठा करनेवालों के लिये दण्ड ठहराया जाता है, और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े हैं।

**Proverbs 20:1**

<sup>1</sup> दाखमधु ठट्ठा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाली है; जो कोई उसके कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं।

**Proverbs 20:2**

<sup>2</sup> राजा का क्रोध, जवान सिंह के गर्जन समान है; जो उसको रोष दिलाता है वह अपना प्राण खो देता है।

**Proverbs 20:3**

<sup>3</sup> मुकद्दमे से हाथ उठाना, पुरुष की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूर्ख झगड़ने को तैयार होते हैं।

**Proverbs 20:4**

<sup>4</sup> आलसी मनुष्य शीत के कारण हल नहीं जोतता; इसलिए कटनी के समय वह भीख माँगता, और कुछ नहीं पाता।

**Proverbs 20:5**

<sup>5</sup> मनुष्य के मन की युक्ति अथाह तो है, तो भी समझवाला मनुष्य उसको निकाल लेता है।

**Proverbs 20:6**

<sup>6</sup> बहुत से मनुष्य अपनी निष्ठा का प्रचार करते हैं; परन्तु सच्चा व्यक्ति कौन पा सकता है?

**Proverbs 20:7**

<sup>7</sup> वह व्यक्ति जो अपनी सत्यनिष्ठा पर चलता है, उसके पुत्र जो उसके पीछे चलते हैं, वे धन्य हैं।

**Proverbs 20:8**

<sup>8</sup> राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठा करता है, वह अपनी दृष्टि ही से सब बुराई को छाँट लेता है।

**Proverbs 20:9**

<sup>9</sup> कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया; अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूँ?

**Proverbs 20:10**

<sup>10</sup> घटते-बढ़ते बटखरे और घटते-बढ़ते नपुए इन दोनों से यहोवा धृणा करता है।

**Proverbs 20:11**

<sup>11</sup> लड़का भी अपने कामों से पहचाना जाता है, कि उसका काम पवित्र और सीधा है, या नहीं।

**Proverbs 20:12**

<sup>12</sup> सुनने के लिये कान और देखने के लिये जो आँखें हैं, उन दोनों को यहोवा ने बनाया है।

**Proverbs 20:13**

<sup>13</sup> नींद से प्रीति न रख, नहीं तो दरिद्र हो जाएगा; आँखें खोल तब तू रोटी से तृप्त होगा।

**Proverbs 20:14**

<sup>14</sup> मोल लेने के समय ग्राहक, “अच्छी नहीं, अच्छी नहीं,” कहता है; परन्तु चले जाने पर बढ़ाई करता है।

**Proverbs 20:15**

<sup>15</sup> सोना और बहुत से बहुमूल्य रक्त तो हैं; परन्तु ज्ञान की बातें अनमोल मणि ठहरी हैं।

**Proverbs 20:16**

<sup>16</sup> किसी अनजान के लिए जमानत देनेवाले के वस्त्र ले और पराए के प्रति जो उत्तरदायी हुआ है उससे बँधक की वस्तु ले रख।

**Proverbs 20:17**

<sup>17</sup> छल-कपट से प्राप्त रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है, परन्तु बाद में उसका मुँह कंकड़ों से भर जाता है।

**Proverbs 20:18**

<sup>18</sup> सब कल्पनाएँ सम्माति ही से स्थिर होती हैं; और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिये।

**Proverbs 20:19**

<sup>19</sup> जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट करता है; इसलिए बकवादी से मेल जोल न रखना।

**Proverbs 20:20**

<sup>20</sup> जो अपने माता-पिता को कोसता, उसका दिया बुझ जाता, और घोर अंधकार हो जाता है।

**Proverbs 20:21**

<sup>21</sup> जो भाग पहले उतावली से मिलता है, अन्त में उस पर आशीष नहीं होती।

**Proverbs 20:22**

<sup>22</sup> मत कह, “मैं बुराई का बदला लूँगा;” वरन् यहोवा की बाट जोहता रह, वह तुझको छुड़ाएगा।

**Proverbs 20:23**

<sup>23</sup> घटते-बढ़ते बटखरों से यहोवा धृणा करता है, और छल का तराजू अच्छा नहीं।

**Proverbs 20:24**

<sup>24</sup> मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है; मनुष्य अपना मार्ग कैसे समझ सकेगा?

**Proverbs 20:25**

<sup>25</sup> जो मनुष्य बिना विचारे किसी वस्तु को पवित्र ठहराए, और जो मन्त्रत मानकर पूछपाछ करने लगे, वह फंदे में फँसेगा।

**Proverbs 20:26**

<sup>26</sup> बुद्धिमान राजा दुष्टों को फटकता है, और उन पर दाँवने का पहिया चलवाता है।

**Proverbs 20:27**

<sup>27</sup> मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है; वह मन की सब बातों की खोज करता है।

**Proverbs 20:28**

<sup>28</sup> राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है, और कृपा करने से उसकी गद्दी सम्मलती है।

**Proverbs 20:29**

<sup>29</sup> जवानों का गौरव उनका बल है, परन्तु बूढ़ों की शोभा उनके पक्के बाल हैं।

**Proverbs 20:30**

<sup>30</sup> चोट लगने से जो घाव होते हैं, वे बुराई दूर करते हैं; और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है।

**Proverbs 21:1**

<sup>1</sup> राजा का मन जल की धाराओं के समान यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको मोड़ देता है।

**Proverbs 21:2**

<sup>2</sup> मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में तो ठीक होता है, परन्तु यहोवा मन को जाँचता है,

**Proverbs 21:3**

<sup>3</sup> धर्म और न्याय करना, यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है।

**Proverbs 21:4**

<sup>4</sup> चढ़ी आँखें, घमण्डी मन, और दुष्टों की खेती, तीनों पापमय हैं।

**Proverbs 21:5**

<sup>5</sup> कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है।

**Proverbs 21:6**

<sup>6</sup> जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो, वह वायु से उड़ जानेवाला कुहरा है, उसके ढूँढ़नेवाले मृत्यु ही को ढूँढ़ते हैं।

**Proverbs 21:7**

<sup>7</sup> जो उपद्रव दुष्ट लोग करते हैं, उससे उन्हीं का नाश होता है, क्योंकि वे न्याय का काम करने से इन्कार करते हैं।

**Proverbs 21:8**

<sup>8</sup> पाप से लदे हुए मनुष्य का मार्ग बहुत ही टेढ़ा होता है, परन्तु जो पवित्र है, उसका कर्म सीधा होता है।

**Proverbs 21:9**

<sup>9</sup> लम्बे-चौड़े घर में झगड़ालू पत्नी के संग रहने से, छत के कोने पर रहना उत्तम है।

**Proverbs 21:10**

<sup>10</sup> दुष्ट जन बुराई की लालसा जी से करता है, वह अपने पड़ोसी पर अनुग्रह की विष्णि नहीं करता।

**Proverbs 21:11**

<sup>11</sup> जब ठट्ठा करनेवाले को दण्ड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है; और जब बुद्धिमान को उपदेश दिया जाता है, तब वह ज्ञान प्राप्त करता है।

**Proverbs 21:12**

<sup>12</sup> धर्मी जन दुष्टों के घराने पर बुद्धिमानी से विचार करता है, और परमेश्वर दुष्टों को बुराइयों में उलट देता है।

**Proverbs 21:13**

<sup>13</sup> जो कंगाल की दुहाई पर कान न दे, वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी।

**Proverbs 21:14**

<sup>14</sup> गुप्त में दी हुई भेट से क्रोध ठंडा होता है, और चुपके से दी हुई धूस से बड़ी जलजलाहट भी थमती है।

**Proverbs 21:15**

<sup>15</sup> न्याय का काम करना धर्मी को तो आनन्द, परन्तु अनर्थकारियों को विनाश ही का कारण जान पड़ता है।

**Proverbs 21:16**

<sup>16</sup> जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाए, उसका ठिकाना मरे हुओं के बीच में होगा।

**Proverbs 21:17**

<sup>17</sup> जो रागरंग से प्रीति रखता है, वह कंगाल हो जाता है; और जो दाखमधु पीने और तेल लगाने से प्रीति रखता है, वह धनी नहीं होता।

**Proverbs 21:18**

<sup>18</sup> दुष्ट जन धर्मी की छुड़ौती ठहरता है, और विश्वासघाती सीधे लोगों के बदले दण्ड भोगते हैं।

**Proverbs 21:19**

<sup>19</sup> झगड़ालू और चिढ़नेवाली पत्नी के संग रहने से, जंगल में रहना उत्तम है।

**Proverbs 21:20**

<sup>20</sup> बुद्धिमान के घर में उत्तम धन और तेल पाए जाते हैं, परन्तु मूर्ख उनको उड़ा डालता है।

**Proverbs 21:21**

<sup>21</sup> जो धर्म और कृपा का पीछा करता है, वह जीवन, धर्म और महिमा भी पाता है।

**Proverbs 21:22**

<sup>22</sup> बुद्धिमान शूरवीरों के नगर पर चढ़कर, उनके बल को जिस पर वे भरोसा करते हैं, नाश करता है।

**Proverbs 21:23**

<sup>23</sup> जो अपने मुँह को वश में रखता है वह अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है।

**Proverbs 21:24**

<sup>24</sup> जो अभिमान से रोष में आकर काम करता है, उसका नाम अभिमानी, और अहंकारी ठट्ठा करनेवाला पड़ता है।

**Proverbs 21:25**

<sup>25</sup> आलसी अपनी लालसा ही में मर जाता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इन्कार करते हैं।

**Proverbs 21:26**

<sup>26</sup> कोई ऐसा है, जो दिन भर लालसा ही किया करता है, परन्तु धर्मी लगातार दान करता रहता है।

**Proverbs 21:27**

<sup>27</sup> दुष्टों का बलिदान घृणित है; विशेष करके जब वह बुरे उद्देश्य के साथ लाता है।

**Proverbs 21:28**

<sup>28</sup> झूठा साक्षी नाश हो जाएगा, परन्तु सच्चा साक्षी सदा स्थिर रहेगा।

**Proverbs 21:29**

<sup>29</sup> दुष्ट मनुष्य अपना मुख कठोर करता है, और धर्मी अपनी चाल सीधी रखता है।

**Proverbs 21:30**

<sup>30</sup> यहोवा के विरुद्ध न तो कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चलती है।

**Proverbs 21:31**

<sup>31</sup> सुदृढ़ के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है।

**Proverbs 22:1**

<sup>1</sup> बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चाँदी से औरों की प्रसन्नता उत्तम है।

**Proverbs 22:2**

<sup>2</sup> धनी और निर्धन दोनों में एक समानता है; यहोवा उन दोनों का कर्ता है।

**Proverbs 22:3**

<sup>3</sup> चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं।

**Proverbs 22:4**

<sup>4</sup> नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल धन, महिमा और जीवन होता है।

**Proverbs 22:5**

<sup>5</sup> टेढ़े मनुष्य के मार्ग में काँटे और फंदे रहते हैं; परन्तु जो अपने प्राणों की रक्षा करता, वह उनसे दूर रहता है।

**Proverbs 22:6**

<sup>6</sup> लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।

**Proverbs 22:7**

<sup>7</sup> धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है, और उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है।

**Proverbs 22:8**

<sup>8</sup> जो कुटिलता का बीज बोता है, वह अनर्थ ही काटेगा, और उसके रोष का सोंटा टूटेगा।

**Proverbs 22:9**

<sup>9</sup> दया करनेवाले पर आशीष फलती है, क्योंकि वह कंगाल को अपनी रोटी में से देता है।

**Proverbs 22:10**

<sup>10</sup> ठट्टा करनेवाले को निकाल दे, तब झगड़ा मिट जाएगा, और वाद-विवाद और अपमान दोनों टूट जाएँगे।

**Proverbs 22:11**

<sup>11</sup> जो मन की शुद्धता से प्रीति रखता है, और जिसके वचन मनोहर होते हैं, राजा उसका मित्र होता है।

**Proverbs 22:12**

<sup>12</sup> यहोवा ज्ञानी पर दृष्टि करके, उसकी रक्षा करता है, परन्तु विश्वासघाती की बातें उलट देता है।

**Proverbs 22:13**

<sup>13</sup> आलसी कहता है, बाहर तो सिंह होगा! मैं चौक के बीच घात किया जाऊँगा।

**Proverbs 22:14**

<sup>14</sup> व्यभिचारिणी का मुँह गहरा गड्ढा है; जिससे यहोवा क्रोधित होता है, वही उसमें गिरता है।

**Proverbs 22:15**

<sup>15</sup> लड़के के मन में मूर्खता की गाँठ बंधी रहती है, परन्तु अनुशासन की छड़ी के द्वारा वह खोलकर उससे दूर की जाती है।

**Proverbs 22:16**

<sup>16</sup> जो अपने लाभ के निमित्त कंगाल पर अंधेर करता है, और जो धनी को भेंट देता, वे दोनों केवल हानि ही उठाते हैं।

**Proverbs 22:17**

<sup>17</sup> कान लगाकर बुद्धिमानों के वचन सुन, और मेरी ज्ञान की बातों की ओर मन लगा;

**Proverbs 22:18**

<sup>18</sup> यदि तू उसको अपने मन में रखे, और वे सब तेरे मुँह से निकला भी करें, तो यह मनभावनी बात होगी।

**Proverbs 22:19**

<sup>19</sup> मैंने आज इसलिए ये बातें तुझको बताई हैं, कि तेरा भरोसा यहोवा पर हो।

**Proverbs 22:20**

<sup>20</sup> मैं बहुत दिनों से तेरे हित के उपदेश और ज्ञान की बातें लिखता आया हूँ,

**Proverbs 22:21**

<sup>21</sup> कि मैं तुझे सत्य वचनों का निश्चय करा दूँ, जिससे जो तुझे काम में लगाएँ, उनको सच्चा उत्तर दे सके।

**Proverbs 22:22**

<sup>22</sup> कंगाल पर इस कारण अंधेर न करना कि वह कंगाल है, और न दीन जन को कचहरी में पीसना;

**Proverbs 22:23**

<sup>23</sup> क्योंकि यहोवा उनका मुकद्दमा लड़ेगा, और जो लोग उनका धन हर लेते हैं, उनका प्राण भी वह हर लेगा।

**Proverbs 22:24**

<sup>24</sup> क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना, और झट क्रोध करनेवाले के संग न चलना,

**Proverbs 22:25**

<sup>25</sup> कहीं ऐसा न हो कि तू उसकी चाल सीखे, और तेरा प्राण फँदे में फँस जाए।

**Proverbs 22:26**

<sup>26</sup> जो लोग हाथ पर हाथ मारते हैं, और कर्जदार के उत्तरदायी होते हैं, उनमें तून होना।

**Proverbs 22:27**

<sup>27</sup> यदि तेरे पास भुगतान करने के साधन की कमी हो, तो क्यों न साहूकार तेरे नीचे से खाट खींच ले जाए?

**Proverbs 22:28**

<sup>28</sup> जो सीमा तेरे पुरखाओं ने बाँधी हो, उस पुरानी सीमा को न बढ़ाना।

**Proverbs 22:29**

<sup>29</sup> यदि तू ऐसा पुरुष देखे जो काम-काज में निपुण हो, तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के सम्मुख नहीं।

**Proverbs 23:1**

<sup>1</sup> जब तू किसी हाकिम के संग भोजन करने को बैठे, तब इस बात को मन लगाकर सोचना कि मेरे सामने कौन है?

**Proverbs 23:2**

<sup>2</sup> और यदि तू अधिक खानेवाला हो, तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना।

**Proverbs 23:3**

<sup>3</sup> उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा न करना, क्योंकि वह धोखे का भोजन है।

**Proverbs 23:4**

<sup>4</sup> धनी होने के लिये परिश्रम न करना; अपनी समझ का भरोसा छोड़ना।

**Proverbs 23:5**

<sup>5</sup> जब तू अपनी दृष्टि धन पर लगाएगा, वह चला जाएगा, वह उकाब पक्षी के समान पंख लगाकर, निःसन्देह आकाश की ओर उड़ जाएगा।

**Proverbs 23:6**

<sup>6</sup> जो डाह से देखता है, उसकी रोटी न खाना, और न उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा करना;

**Proverbs 23:7**

<sup>7</sup> क्योंकि वह ऐसा व्यक्ति है, जो भोजन के कीमत की गणना करता है। वह तुझ से कहता तो है, खा और पी, परन्तु उसका मन तुझ से लगा नहीं है।

**Proverbs 23:8**

<sup>8</sup> जो कौर तूने खाया हो, उसे उगलना पड़ेगा, और तू अपनी मीठी बातों का फल खोएगा।

**Proverbs 23:9**

<sup>9</sup> मूर्ख के सामने न बोलना, नहीं तो वह तेरे बुद्धि के वचनों को तुच्छ जानेगा।

**Proverbs 23:10**

<sup>10</sup> पुरानी सीमाओं को न बढ़ाना, और न अनाथों के खेत में घुसना;

**Proverbs 23:11**

<sup>11</sup> क्योंकि उनका छुड़ानेवाला सामर्थ्य है; उनका मुकद्दमा तेरे संग वहीं लड़ेगा।

**Proverbs 23:12**

<sup>12</sup> अपना हृदय शिक्षा की ओर, और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना।

**Proverbs 23:13**

<sup>13</sup> लड़के की ताड़ना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा।

**Proverbs 23:14**

<sup>14</sup> तू उसको छड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा।

**Proverbs 23:15**

<sup>15</sup> हे मेरे पुत्र, यदि तू बुद्धिमान हो, तो मेरा ही मन आनन्दित होगा।

**Proverbs 23:16**

<sup>16</sup> और जब तू सीधी बातें बोले, तब मेरा मन प्रसन्न होगा।

**Proverbs 23:17**

<sup>17</sup> तू पापियों के विषय मन में डाह न करना, दिन भर यहोवा का भय मानते रहना।

**Proverbs 23:18**

<sup>18</sup> क्योंकि अन्त में फल होगा, और तेरी आशा न टूटेगी।

**Proverbs 23:19**

<sup>19</sup> हे मेरे पुत्र, तू सुनकर बुद्धिमान हो, और अपना मन सुमार्ग में सीधा चला।

**Proverbs 23:20**

<sup>20</sup> दाखमधु के पीनेवालों में न होना, न माँस के अधिक खानेवालों की संगति करना;

**Proverbs 23:21**

<sup>21</sup> क्योंकि पियककड़ और पेटू दरिद्र हो जाएँगे, और उनका क्रोध उन्हें चिथड़े पहनाएगी।

**Proverbs 23:22**

<sup>22</sup> अपने जन्मानेवाले पिता की सुनना, और जब तेरी माता बुद्धिया हो जाए, तब भी उसे तुच्छ न जानना।

**Proverbs 23:23**

<sup>23</sup> सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं; और बुद्धि और शिक्षा और समझ को भी मोल लेना।

**Proverbs 23:24**

<sup>24</sup> धर्मी का पिता बहुत मग्न होता है; और बुद्धिमान का जन्मानेवाला उसके कारण आनन्दित होता है।

**Proverbs 23:25**

<sup>25</sup> तेरे कारण तेरे माता-पिता आनन्दित और तेरी जननी मग्न हो।

**Proverbs 23:26**

<sup>26</sup> हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा, और तेरी दृष्टि मेरे चाल चलन पर लगी रहे।

**Proverbs 23:27**

<sup>27</sup> वेश्या गहरा गङ्गा ठहरती है; और पराई स्त्री सकेत कुएँ के समान है।

**Proverbs 23:28**

<sup>28</sup> वह डाकू के समान घात लगाती है, और बहुत से मनुष्यों को विश्वासघाती बना देती है।

**Proverbs 23:29**

<sup>29</sup> कौन कहता है, हाय? कौन कहता है, हाय, हाय? कौन झगड़े-रगड़े में फँसता है? कौन बक-बक करता है? किसके अकारण घाव होते हैं? किसकी आँखें लाल हो जाती हैं?

**Proverbs 23:30**

<sup>30</sup> उनकी जो दाखमधु देर तक पीते हैं, और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूँढ़ने को जाते हैं।

**Proverbs 23:31**

<sup>31</sup> जब दाखमधु लाल दिखाई देता है, और कटोरे में उसका सुन्दर रंग होता है, और जब वह धार के साथ उण्डेला जाता है, तब उसको न देखना।

**Proverbs 23:32**

<sup>32</sup> क्योंकि अन्त में वह सर्प के समान डसता है, और करैत के समान काटता है।

**Proverbs 23:33**

<sup>33</sup> तू विचित्र वस्तुएँ देखेगा, और उलटी-सीधी बातें बकता रहेगा।

**Proverbs 23:34**

<sup>34</sup> और तू समुद्र के बीच लेटनेवाले या मस्तूल के सिरे पर सोनेवाले के समान रहेगा।

**Proverbs 23:35**

<sup>35</sup> तू कहेगा कि मैंने मार तो खाई, परन्तु दुःखित न हुआ; मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ सुधि न थी। मैं होश में कब आऊँ? मैं तो फिर मदिरा ढूँढ़गा।

**Proverbs 24:1**

<sup>1</sup> बुरे लोगों के विषय में डाह न करना, और न उसकी संगति की चाह रखना;

**Proverbs 24:2**

<sup>2</sup> क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं, और उनके मुँह से दुष्टता की बात निकलती है।

**Proverbs 24:3**

<sup>3</sup> घर बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा स्थिर होता है।

**Proverbs 24:4**

<sup>4</sup> ज्ञान के द्वारा कोठरियाँ सब प्रकार की बहुमूल्य और मनोहर वस्तुओं से भर जाती हैं।

**Proverbs 24:5**

<sup>5</sup> वीर पुरुष बलवान होता है, परन्तु ज्ञानी व्यक्ति बलवान पुरुष से बेहतर है।

**Proverbs 24:6**

<sup>6</sup> इसलिए जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मंत्रियों के द्वारा प्राप्त होती है।

**Proverbs 24:7**

<sup>7</sup> बुद्धि इतने ऊँचे पर है कि मूर्ख उसे पा नहीं सकता; वह सभा में अपना मुँह खोल नहीं सकता।

**Proverbs 24:8**

<sup>8</sup> जो सोच विचार के बुराई करता है, उसको लोग दुष्ट कहते हैं।

**Proverbs 24:9**

<sup>9</sup> मूर्खता का विचार भी पाप है, और ठड़ा करनेवाले से मनुष्य घृणा करते हैं।

**Proverbs 24:10**

<sup>10</sup> यदि तू विपत्ति के समय साहस छोड़ दे, तो तेरी शक्ति बहुत कम है।

**Proverbs 24:11**

<sup>11</sup> जो मार डाले जाने के लिये घसीटे जाते हैं उनको छुड़ा; और जो घात किए जाने को हैं उन्हें रोक।

**Proverbs 24:12**

<sup>12</sup> यदि तू कहे, कि देख मैं इसको जानता न था, तो क्या मन का जाँचनेवाला इसे नहीं समझता? और क्या तेरे प्राणों का रक्षक इसे नहीं जानता? और क्या वह हर एक मनुष्य के काम का फल उसे न देगा?

**Proverbs 24:13**

<sup>13</sup> हे मेरे पुत्र तू मधु खा, क्योंकि वह अच्छा है, और मधु का छत्ता भी, क्योंकि वह तेरे मुँह में मीठा लगेगा।

**Proverbs 24:14**

<sup>14</sup> इसी रीति बुद्धि भी तुझे वैसी ही मीठी लगेगी; यदि तू उसे पा जाए तो अन्त में उसका फल भी मिलेगा, और तेरी आशा न टूटेगी।

**Proverbs 24:15**

<sup>15</sup> तू दुष्ट के समान धर्मी के निवास को नष्ट करने के लिये घात में न बैठ; और उसके विश्रामस्थान को मत उजाड़;

**Proverbs 24:16**

<sup>16</sup> क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे तो भी उठ खड़ा होता है; परन्तु दुष्ट लोग विपत्ति में गिरकर पड़े ही रहते हैं।

**Proverbs 24:17**

<sup>17</sup> जब तेरा शत्रु गिर जाए तब तू आनन्दित न हो, और जब वह ठोकर खाए, तब तेरा मन मगन न हो।

**Proverbs 24:18**

<sup>18</sup> कहीं ऐसा न हो कि यहोवा यह देखकर अप्रसन्न हो और अपना क्रोध उस पर से हटा ले।

**Proverbs 24:19**

<sup>19</sup> कुकर्मियों के कारण मत कुढ़, दुष्ट लोगों के कारण डाह न कर;

**Proverbs 24:20**

<sup>20</sup> क्योंकि बुरे मनुष्य को अन्त में कुछ फल न मिलेगा, दुष्टों का दीपक बुझा दिया जाएगा।

**Proverbs 24:21**

<sup>21</sup> हे मेरे पुत्र, यहोवा और राजा दोनों का भय मानना; और उनके विरुद्ध बलवा करनेवालों के साथ न मिलना;

**Proverbs 24:22**

<sup>22</sup> क्योंकि उन पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी, और दोनों की ओर से आनेवाली विपत्ति को कौन जानता है?

**Proverbs 24:23**

<sup>23</sup> बुद्धिमानों के वचन यह भी हैं। न्याय में पक्षपात करना, किसी भी रीति से अच्छा नहीं।

**Proverbs 24:24**

<sup>24</sup> जो दुष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है, उसको तो हर समाज के लोग श्राप देते और जाति-जाति के लोग धमकी देते हैं;

**Proverbs 24:25**

<sup>25</sup> परन्तु जो लोग दुष्ट को डाँटते हैं उनका भला होता है, और उत्तम से उत्तम आशीर्वाद उन पर आता है।

**Proverbs 24:26**

<sup>26</sup> जो सीधा उत्तर देता है, वह होठों को चूमता है।

**Proverbs 24:27**

<sup>27</sup> अपना बाहर का काम-काज ठीक करना, और अपने लिए खेत को भी तैयार कर लेना; उसके बाद अपना घर बनाना।

**Proverbs 24:28**

<sup>28</sup> व्यर्थ अपने पड़ोसी के विरुद्ध साक्षी न देना, और न उसको फुसलाना।

**Proverbs 24:29**

<sup>29</sup> मत कह, “जैसा उसने मेरे साथ किया वैसा ही मैं भी उसके साथ करूँगा; और उसको उसके काम के अनुसार पलटा दूँगा।”

**Proverbs 24:30**

<sup>30</sup> मैं आलसी के खेत के पास से और निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की बारी के पास होकर जाता था,

**Proverbs 24:31**

<sup>31</sup> तो क्या देखा, कि वहाँ सब कहाँ कटीले पेड़ भर गए हैं; और वह बिच्छू पौधों से ढँक गई है, और उसके पथर का बाड़ा गिर गया है।

**Proverbs 24:32**

<sup>32</sup> तब मैंने देखा और उस पर ध्यानपूर्वक विचार किया; हाँ मैंने देखकर शिक्षा प्राप्त की।

**Proverbs 24:33**

<sup>33</sup> छोटी सी नींद, एक और झापकी, थोड़ी देर हाथ पर हाथ रख के लेटे रहना,

**Proverbs 24:34**

<sup>34</sup> तब तेरा कंगालपन डाकू के समान, और तेरी घटी हथियार-बन्द के समान आ पड़ेगी।

**Proverbs 25:1**

<sup>1</sup> सुलैमान के नीतिवचन ये भी हैं; जिन्हें यहूदा के राजा हिजकियाह के जनों ने नकल की थी।

**Proverbs 25:2**

<sup>2</sup> परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात के पता लगाने से होती है।

**Proverbs 25:3**

<sup>3</sup> स्वर्ग की ऊँचाई और पृथ्वी की गहराई और राजाओं का मन, इन तीनों का अन्त नहीं मिलता।

**Proverbs 25:4**

<sup>4</sup> चाँदी में से मैल दूर करने पर वह सुनार के लिये काम की हो जाती है।

**Proverbs 25:5**

<sup>5</sup> वैसे ही, राजा के सामने से दुष्ट को निकाल देने पर उसकी गद्दी धर्म के कारण स्थिर होगी।

**Proverbs 25:6**

<sup>6</sup> राजा के सामने अपनी बड़ाई न करना और बड़े लोगों के स्थान में खड़ा न होना;

**Proverbs 25:7**

<sup>7</sup> उनके लिए तुझ से यह कहना बेहतर है कि, “इधर मेरे पास आकर बैठ” ताकि प्रधानों के सम्मुख तुझे अपमानित न होना पड़े।

**Proverbs 25:8**

<sup>8</sup> जो कुछ तूने देखा है, वह जल्दी से अदालत में न ला, अन्त में जब तेरा पड़ोसी तुझे शर्मिदा करेगा तो तू क्या करेगा?

**Proverbs 25:9**

<sup>9</sup> अपने पड़ोसी के साथ वाद-विवाद एकान्त में करना और पराए का भेद न खोलना;

**Proverbs 25:10**

<sup>10</sup> ऐसा न हो कि सुननेवाला तेरी भी निन्दा करे, और तेरी निन्दा बनी रहे।

**Proverbs 25:11**

<sup>11</sup> जैसे चाँदी की टोकरियों में सोने के सेब हों, वैसे ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है।

**Proverbs 25:12**

<sup>12</sup> जैसे सोने का नथ्य और कुन्दन का जेवर अच्छा लगता है, वैसे ही माननेवाले के कान में बुद्धिमान की डाँट भी अच्छी लगती है।

**Proverbs 25:13**

<sup>13</sup> जैसे कटनी के समय बर्फ की ठण्ड से, वैसा ही विश्वासयोग्य दूत से भी, भेजनेवालों का जी ठंडा होता है।

**Proverbs 25:14**

<sup>14</sup> जैसे बादल और पवन बिना वृष्टि निर्लभ होते हैं, वैसे ही झूठ-मूठ दान देनेवाले का बड़ाई मारना होता है।

**Proverbs 25:15**

<sup>15</sup> धीरज धरने से न्यायी मनाया जाता है, और कोमल वचन हड्डी को भी तोड़ डालता है।

**Proverbs 25:16**

<sup>16</sup> क्या तूने मधु पाया? तो जितना तेरे लिये ठीक हो उतना ही खाना, ऐसा न हो कि अधिक खाकर उसे उगल दे।

**Proverbs 25:17**

<sup>17</sup> अपने पड़ोसी के घर में बारम्बार जाने से अपने पाँव को रोक, ऐसा न हो कि वह खिन्न होकर घृणा करने लगे।

**Proverbs 25:18**

<sup>18</sup> जो किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी देता है, वह मानो हथौड़ा और तलवार और पैना तीर है।

**Proverbs 25:19**

<sup>19</sup> विपत्ति के समय विश्वासघाती का भरोसा, टूटे हुए दाँत या उखड़े पाँव के समान है।

**Proverbs 25:20**

<sup>20</sup> जैसा जाड़े के दिनों में किसी का वस्त्र उतारना या सज्जी पर सिरका डालना होता है, वैसा ही उदास मनवाले के सामने गीत गाना होता है।

**Proverbs 25:21**

<sup>21</sup> यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसको रोटी खिलाना; और यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाना;

**Proverbs 25:22**

<sup>22</sup> क्योंकि इस रीति तू उसके सिर पर अंगारे डालेगा, और यहोवा तुझे इसका फल देगा।

**Proverbs 25:23**

<sup>23</sup> जैसे उत्तरी वायु वर्षा को लाती है, वैसे ही चुगली करने से मुख पर क्रोध छा जाता है।

**Proverbs 25:24**

<sup>24</sup> लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू पनी के संग रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है।

**Proverbs 25:25**

<sup>25</sup> दूर देश से शुभ सन्देश, प्यासे के लिए ठंडे पानी के समान है।

**Proverbs 25:26**

<sup>26</sup> जो धर्मी दुष्ट के कहने में आता है, वह खराब जल-स्रोत और बिगड़े हुए कुण्ड के समान है।

**Proverbs 25:27**

<sup>27</sup> जैसे बहुत मधु खाना अच्छा नहीं, वैसे ही आत्मप्रशंसा करना भी अच्छा नहीं।

**Proverbs 25:28**

<sup>28</sup> जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह घेराव करके तोड़ दी गई हो।

**Proverbs 26:1**

<sup>1</sup> जैसा धूपकाल में हिम का, या कटनी के समय वर्षा होना, वैसा ही मूर्ख की महिमा भी ठीक नहीं होती।

**Proverbs 26:2**

<sup>2</sup> जैसे गौरेया धूमते-धूमते और शूपाबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती, वैसे ही व्यर्थ श्राप नहीं पड़ता।

**Proverbs 26:3**

<sup>3</sup> घोड़े के लिये कोड़ा, गदहे के लिये लगाम, और मूर्खों की पीठ के लिये छड़ी है।

**Proverbs 26:4**

<sup>4</sup> मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरे।

**Proverbs 26:5**

<sup>5</sup> मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर देना, ऐसा न हो कि वह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान ठहरे।

**Proverbs 26:6**

<sup>6</sup> जो मूर्ख के हाथ से सन्देशा भेजता है, वह मानो अपने पाँव में कुल्हाड़ा मारता और विष पीता है।

**Proverbs 26:7**

<sup>7</sup> जैसे लँगड़े के पाँव लड़खड़ाते हैं, वैसे ही मूर्खों के मुँह में नीतिवचन होता है।

**Proverbs 26:8**

<sup>8</sup> जैसे पथरों के ढेर में मणियों की थैली, वैसे ही मूर्ख को महिमा देनी होती है।

**Proverbs 26:9**

<sup>9</sup> जैसे मतवाले के हाथ में कँटा गड़ता है, वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी दुःखदाई होता है।

**Proverbs 26:10**

<sup>10</sup> जैसा कोई तीरन्दाज जो अकारण सब को मारता हो, वैसा ही मूर्खों या राहगीरों का मजदूरी में लगानेवाला भी होता है।

**Proverbs 26:11**

<sup>11</sup> जैसे कुत्ता अपनी छाँट को चाटता है, वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता को दोहराता है।

**Proverbs 26:12**

<sup>12</sup> यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनता हो, तो उससे अधिक आशा मूर्ख ही से है।

**Proverbs 26:13**

<sup>13</sup> आलसी कहता है, “मार्ग में सिंह है, चौक में सिंह है!”

**Proverbs 26:14**

<sup>14</sup> जैसे किवाड़ अपनी चूल पर धूमता है, वैसे ही आलसी अपनी खाट पर करवटे लेता है।

**Proverbs 26:15**

<sup>15</sup> आलसी अपना हाथ थाली में तो डालता है, परन्तु आलस्य के कारण कौर मुँह तक नहीं उठाता।

**Proverbs 26:16**

<sup>16</sup> आलसी अपने को ठीक उत्तर देनेवाले सात मनुष्यों से भी अधिक बुद्धिमान समझता है।

**Proverbs 26:17**

<sup>17</sup> जो मार्ग पर चलते हुए पराए झगड़े में विघ्न डालता है, वह उसके समान है, जो कुत्ते को कानों से पकड़ता है।

**Proverbs 26:18**

<sup>18</sup> जैसा एक पागल जो जहरीले तीर मारता है,

**Proverbs 26:19**

<sup>19</sup> वैसा ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी को धोखा देकर कहता है, “मैं तो मजाक कर रहा था।”

**Proverbs 26:20**

<sup>20</sup> जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है, उसी प्रकार जहाँ कानाफूसी करनेवाला नहीं, वहाँ झगड़ा मिट जाता है।

**Proverbs 26:21**

<sup>21</sup> जैसा अंगारों में कोयला और आग में लकड़ी होती है, वैसा ही झगड़ा बढ़ाने के लिये झगड़ालू होता है।

**Proverbs 26:22**

<sup>22</sup> कानाफूसी करनेवाले के वचन, स्वादिष्ट भोजन के समान भीतर उत्तर जाते हैं।

**Proverbs 26:23**

<sup>23</sup> जैसा कोई चाँदी का पानी चढ़ाया हुआ मिट्टी का बर्तन हो, वैसा ही बुरे मनवाले के प्रेम भरे वचन होते हैं।

**Proverbs 26:24**

<sup>24</sup> जो बैरी बात से तो अपने को भोला बनाता है, परन्तु अपने भीतर छल रखता है,

**Proverbs 26:25**

<sup>25</sup> उसकी मीठी-मीठी बात पर विश्वास न करना, क्योंकि उसके मन में सात धिनौनी वस्तुएँ रहती हैं;

**Proverbs 26:26**

<sup>26</sup> चाहे उसका बैर छल के कारण छिप भी जाए, तो भी उसकी बुराई सभा के बीच प्रगट हो जाएगी।

**Proverbs 26:27**

<sup>27</sup> जो गङ्गा खोदे, वही उसी में गिरेगा, और जो पथर लुढ़काए, वह उलटकर उसी पर लुढ़क आएगा।

**Proverbs 26:28**

<sup>28</sup> जिसने किसी को झूठी बातों से घायल किया हो वह उससे बैर रखता है, और चिकनी चुपड़ी बात बोलनेवाला विनाश का कारण होता है।

**Proverbs 27:1**

<sup>1</sup> कल के दिन के विषय में डींग मत मार, क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा।

**Proverbs 27:2**

<sup>2</sup> तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें, परन्तु तू आप न करना; दूसरा तुझे सराहे तो सराहे, परन्तु तू अपनी सराहना न करना।

**Proverbs 27:3**

<sup>3</sup> पथर तो भारी है और रेत में बोझ है, परन्तु मूर्ख का क्रोध, उन दोनों से भी भारी है।

**Proverbs 27:4**

<sup>4</sup> क्रोध की कूरता और प्रकोप की बाढ़, परन्तु ईर्ष्या के सामने कौन ठहर सकता है?

**Proverbs 27:5**

<sup>5</sup> खुली हुई डाँट गुप्त प्रेम से उत्तम है।

**Proverbs 27:6**

<sup>6</sup> जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वासयोग्य हैं परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है।

**Proverbs 27:7**

<sup>7</sup> सन्तुष्ट होने पर मधु का छत्ता भी फीका लगता है, परन्तु भूखे को सब कड़वी वस्तुएँ भी मीठी जान पड़ती हैं।

**Proverbs 27:8**

<sup>8</sup> स्थान छोड़कर धूमनेवाला मनुष्य उस चिड़िया के समान है, जो घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है।

**Proverbs 27:9**

<sup>9</sup> जैसे तेल और सुगन्ध से, वैसे ही मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है।

**Proverbs 27:10**

<sup>10</sup> जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो उसे न छोड़ना; और अपनी विपत्ति के दिन, अपने भाई के घर न जाना। प्रेम करनेवाला पड़ोसी, दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है।

**Proverbs 27:11**

<sup>11</sup> हे मेरे पुत्र, बुद्धिमान होकर मेरा मन आनन्दित कर, तब मैं अपने निन्दा करनेवाले को उत्तर दे सकूँगा।

**Proverbs 27:12**

<sup>12</sup> बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़े चले जाते और हानि उठाते हैं।

**Proverbs 27:13**

<sup>13</sup> जो पराए का उत्तरदायी हो उसका कपड़ा, और जो अनजान का उत्तरदायी हो उससे बन्धक की वस्तु ले ले।

**Proverbs 27:14**

<sup>14</sup> जो भोर को उठकर अपने पड़ोसी को ऊँचे शब्द से आशीर्वाद देता है, उसके लिये यह श्राप गिना जाता है।

**Proverbs 27:15**

<sup>15</sup> झगड़ी के दिन पानी का लगातार टपकना, और झगड़ालू पत्ती दोनों एक से हैं;

**Proverbs 27:16**

<sup>16</sup> जो उसको रोक रखे, वह वायु को भी रोक रखेगा और दाहिने हाथ से वह तेल पकड़ेगा।

**Proverbs 27:17**

<sup>17</sup> जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

**Proverbs 27:18**

<sup>18</sup> जो अंजीर के पेड़ की रक्षा करता है वह उसका फल खाता है, इसी रीति से जो अपने स्वामी की सेवा करता उसकी महिमा होती है।

**Proverbs 27:19**

<sup>19</sup> जैसे जल में मुख की परछाई मुख को प्रगट करती है, वैसे ही मनुष्य का मन मनुष्य को प्रगट करती है।

**Proverbs 27:20**

<sup>20</sup> जैसे अधोलोक और विनाशलोक, वैसे ही मनुष्य की आँखें भी तृप्त नहीं होती।

**Proverbs 27:21**

<sup>21</sup> जैसे चाँदी के लिये कुठाली और सोने के लिये भट्टी हैं, वैसे ही मनुष्य के लिये उसकी प्रशंसा है।

**Proverbs 27:22**

<sup>22</sup> चाहे तू मूर्ख को अनाज के बीच ओखली में डालकर मूसल से कूटे, तो भी उसकी मूर्खता नहीं जाने की।

**Proverbs 27:23**

<sup>23</sup> अपनी भेड़-बकरियों की दशा भली भाँति मन लगाकर जान ले, और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देख-भाल उचित रीति से कर;

**Proverbs 27:24**

<sup>24</sup> क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती; और क्या राजमुकुट पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है?

**Proverbs 27:25**

<sup>25</sup> कटी हुई धास उठा ली जाती और नई धास दिखाई देती है और पहाड़ों की हरियाली काटकर इकट्ठी की जाती है;

**Proverbs 27:26**

<sup>26</sup> तब भेड़ों के बच्चे तेरे वस्त के लिये होंगे, और बकरों के द्वारा खेत का मूल्य दिया जाएगा;

**Proverbs 27:27**

<sup>27</sup> और बकरियों का इतना दूध होगा कि तू अपने घराने समेत पेट भरकर पिया करेगा, और तेरी दासियों का भी जीवन निर्वाह होता रहेगा।

**Proverbs 28:1**

<sup>1</sup> दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं, परन्तु धर्मी लोग जवान सिंहों के समान निडर रहते हैं।

**Proverbs 28:2**

<sup>2</sup> देश में पाप होने के कारण उसके हाकिम बदलते जाते हैं; परन्तु समझदार और ज्ञानी मनुष्य के द्वारा सुप्रबन्ध बहुत दिन के लिये बना रहेगा।

**Proverbs 28:3**

<sup>3</sup> जो निर्धन पुरुष कंगालों पर अंधेर करता है, वह ऐसी भारी वर्षा के समान है जो कुछ भोजनवस्तु नहीं छोड़ती।

**Proverbs 28:4**

<sup>4</sup> जो लोग व्यवस्था को छोड़ देते हैं, वे दुष्ट की प्रशंसा करते हैं, परन्तु व्यवस्था पर चलनेवाले उनका विरोध करते हैं।

**Proverbs 28:5**

<sup>5</sup> बुरे लोग न्याय को नहीं समझ सकते, परन्तु यहोवा को द्वैङ्गेनेवाले सब कुछ समझते हैं।

**Proverbs 28:6**

<sup>6</sup> टेढ़ी चाल चलनेवाले धनी मनुष्य से खराई से चलनेवाला निर्धन पुरुष ही उत्तम है।

**Proverbs 28:7**

<sup>7</sup> जो व्यवस्था का पालन करता वह समझदार सुपूत होता है, परन्तु उड़ाऊ का संगी अपने पिता का मुँह काला करता है।

**Proverbs 28:8**

<sup>8</sup> जो अपना धन ब्याज से बढ़ाता है, वह उसके लिये बटोरता है जो कंगालों पर अनुग्रह करता है।

**Proverbs 28:9**

<sup>9</sup> जो अपना कान व्यवस्था सुनने से मोड़ लेता है, उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है।

**Proverbs 28:10**

<sup>10</sup> जो सीधे लोगों को भटकाकर कुमार्ग में ले जाता है वह अपने खोदे हुए गड्ढे में आप ही गिरता है; परन्तु खेरे लोग कल्याण के भागी होते हैं।

**Proverbs 28:11**

<sup>11</sup> धनी पुरुष अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होता है, परन्तु समझदार कंगाल उसका मर्म समझ लेता है।

**Proverbs 28:12**

<sup>12</sup> जब धर्मी लोग जयवन्त होते हैं, तब बड़ी शोभा होती है; परन्तु जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं, तब मनुष्य अपने आपको छिपाता है।

**Proverbs 28:13**

<sup>13</sup> जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगी।

**Proverbs 28:14**

<sup>14</sup> जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय मानता रहता है वह धन्य है; परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है वह विपत्ति में पड़ता है।

**Proverbs 28:15**

<sup>15</sup> कंगाल प्रजा पर प्रभुता करनेवाला दुष्ट, गरजनेवाले सिंह और धूमनेवाले रीछ के समान है।

**Proverbs 28:16**

<sup>16</sup> वह शासक जिसमें समझ की कमी हो, वह बहुत अंधेर करता है; और जो लालच का बैरी होता है वह दीघायु होता है।

**Proverbs 28:17**

<sup>17</sup> जो किसी प्राणी की हत्या का अपराधी हो, वह भागकर गड्ढे में गिरेगा; कोई उसको न रोकेगा।

**Proverbs 28:18**

<sup>18</sup> जो सिधाई से चलता है वह बचाया जाता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है वह अचानक गिर पड़ता है।

**Proverbs 28:19**

<sup>19</sup> जो अपनी भूमि को जोता-बोया करता है, उसका तो पेट भरता है, परन्तु जो निकम्मे लोगों की संगति करता है वह कंगालपन से घिरा रहता है।

**Proverbs 28:20**

<sup>20</sup> सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद होते रहते हैं, परन्तु जो धनी होने में उतावली करता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता।

**Proverbs 28:21**

<sup>21</sup> पक्षपात करना अच्छा नहीं; और यह भी अच्छा नहीं कि रोटी के एक टुकड़े के लिए मनुष्य अपराध करे।

**Proverbs 28:22**

<sup>22</sup> लोभी जन धन प्राप्त करने में उतावली करता है, और नहीं जानता कि वह घटी में पड़ेगा।

**Proverbs 28:23**

<sup>23</sup> जो किसी मनुष्य को डाँटता है वह अन्त में चापलूसी करनेवाले से अधिक प्यारा हो जाता है।

**Proverbs 28:24**

<sup>24</sup> जो अपने माँ-बाप को लूटकर कहता है कि कुछ अपराध नहीं, वह नाश करनेवाले का संगी ठहरता है।

**Proverbs 28:25**

<sup>25</sup> लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह हष्ट-पुष्ट हो जाता है।

**Proverbs 28:26**

<sup>26</sup> जो अपने ऊपर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है; और जो बुद्धि से चलता है, वह बचता है।

**Proverbs 28:27**

<sup>27</sup> जो निर्धन को दान देता है उसे घटी नहीं होती, परन्तु जो उससे दृष्टि फेर लेता है वह श्राप पर श्राप पाता है।

**Proverbs 28:28**

<sup>28</sup> जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं तब तो मनुष्य ढूँढ़े नहीं मिलते, परन्तु जब वे नाश हो जाते हैं, तब धर्मी उन्नति करते हैं।

**Proverbs 29:1**

<sup>1</sup> जो बार बार डॉटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नष्ट हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।

**Proverbs 29:2**

<sup>2</sup> जब धर्मी लोग शिरोमणि होते हैं, तब प्रजा आनन्दित होती है; परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है तब प्रजा हाय-हाय करती है।

**Proverbs 29:3**

<sup>3</sup> जो बुद्धि से प्रीति रखता है, वह अपने पिता को आनन्दित करता है, परन्तु वेश्याओं की संगति करनेवाला धन को उड़ा देता है।

**Proverbs 29:4**

<sup>4</sup> राजा न्याय से देश को स्थिर करता है, परन्तु जो बहुत घूस लेता है उसको उलट देता है।

**Proverbs 29:5**

<sup>5</sup> जो पुरुष किसी से चिकनी चुपड़ी बातें करता है, वह उसके पैरों के लिये जाल लगाता है।

**Proverbs 29:6**

<sup>6</sup> बुरे मनुष्य का अपराध उसके लिए फंदा होता है, परन्तु धर्मी आनन्दित होकर जयजयकार करता है।

**Proverbs 29:7**

<sup>7</sup> धर्मी पुरुष कंगालों के मुकद्दमे में मन लगाता है; परन्तु दुष्ट जन उसे जानने की समझ नहीं रखता।

**Proverbs 29:8**

<sup>8</sup> ठड़ा करनेवाले लोग नगर को फूँक देते हैं, परन्तु बुद्धिमान लोग क्रोध को ठंडा करते हैं।

**Proverbs 29:9**

<sup>9</sup> जब बुद्धिमान मूर्ख के साथ वाद-विवाद करता है, तब वह मूर्ख क्राधित होता और ठड़ा करता है, और वहाँ शान्ति नहीं रहती।

**Proverbs 29:10**

<sup>10</sup> हत्यारे लोग खेरे पुरुष से बैर रखते हैं, और सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं।

**Proverbs 29:11**

<sup>11</sup> मूर्ख अपने सारे मन की बात खोल देता है, परन्तु बुद्धिमान अपने मन को रोकता, और शान्त कर देता है।

**Proverbs 29:12**

<sup>12</sup> जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है, तब उसके सब सेवक दुष्ट हो जाते हैं।

**Proverbs 29:13**

<sup>13</sup> निर्धन और अधेर करनेवाले व्यक्तियों में एक समानता है; यहोवा दोनों की आँखों में ज्योति देता है।

**Proverbs 29:14**

<sup>14</sup> जो राजा कंगालों का न्याय सच्चाई से चुकाता है, उसकी गद्दी सदैव स्थिर रहती है।

**Proverbs 29:15**

<sup>15</sup> छड़ी और डॉट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो लड़का ऐसे ही छोड़ा जाता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है।

**Proverbs 29:16**

<sup>16</sup> दुष्टों के बढ़ने से अपराध भी बढ़ता है; परन्तु अन्त में धर्मी लोग उनका गिरना देख लेते हैं।

**Proverbs 29:17**

<sup>17</sup> अपने बेटे की ताड़ना कर, तब उससे तुझे चैन मिलेगा; और तेरा मन सुखी हो जाएगा।

**Proverbs 29:18**

<sup>18</sup> जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं, परन्तु जो व्यवस्था को मानता है वह धन्य होता है।

**Proverbs 29:19**

<sup>19</sup> दास बातों ही के द्वारा सुधारा नहीं जाता, क्योंकि वह समझकर भी नहीं मानता।

**Proverbs 29:20**

<sup>20</sup> क्या तू बातें करने में उतावली करनेवाले मनुष्य को देखता है? उससे अधिक तो मूर्ख ही से आशा है।

**Proverbs 29:21**

<sup>21</sup> जो अपने दास को उसके लड़कपन से ही लाड़-प्यार से पालता है, वह दास अन्त में उसका बेटा बन बैठता है।

**Proverbs 29:22**

<sup>22</sup> क्रोध करनेवाला मनुष्य झागड़ा मचाता है और अत्यन्त क्रोध करनेवाला अपराधी भी होता है।

**Proverbs 29:23**

<sup>23</sup> मनुष्य को गर्व के कारण नीचा देखना पड़ता है, परन्तु नम्र आत्मावाला महिमा का अधिकारी होता है।

**Proverbs 29:24**

<sup>24</sup> जो चोर की संगति करता है वह अपने प्राण का बैरी होता है; शपथ खाने पर भी वह बात को प्रगट नहीं करता।

**Proverbs 29:25**

<sup>25</sup> मनुष्य का भय खाना फंदा हो जाता है, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है उसका स्थान ऊँचा किया जाएगा।

**Proverbs 29:26**

<sup>26</sup> हाकिम से भेंट करना बहुत लोग चाहते हैं, परन्तु मनुष्य का न्याय यहोवा ही करता है।

**Proverbs 29:27**

<sup>27</sup> धर्मी लोग कुटिल मनुष्य से घृणा करते हैं और दुष्ट जन भी सीधी चाल चलनेवाले से घृणा करता है।

**Proverbs 30:1**

<sup>1</sup> याके के पुत्र आगूर के प्रभावशाली वचन। उस पुरुष ने ईतीएल और उक्काल से यह कहा:

**Proverbs 30:2**

<sup>2</sup> निश्चय मैं पशु सरीखा हूँ, वरन् मनुष्य कहलाने के योग्य भी नहीं; और मनुष्य की समझ मुझे में नहीं है।

**Proverbs 30:3**

<sup>3</sup> न मैंने बुद्धि प्राप्त की है, और न परमपवित्र का ज्ञान मुझे मिला है।

**Proverbs 30:4**

<sup>4</sup> कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया? किसने वायु को अपनी मुट्ठी में बटोर रखा है? किसने महासागर को अपने वस्त्र में बाँध लिया है? किसने पृथ्वी की सीमाओं को ठहराया है? उसका नाम क्या है? और उसके पुत्र का नाम क्या है? यदि तू जानता हो तो बता!

**Proverbs 30:5**

<sup>5</sup> परमेश्वर का एक-एक वचन ताया हुआ है; वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है।

**Proverbs 30:6**

<sup>6</sup> उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डाँटे और तू झूठा ठहरे।

**Proverbs 30:7**

<sup>7</sup> मैंने तुझ से दो वर माँगे हैं, इसलिए मेरे मरने से पहले उन्हें मुझे देने से मुँह न मोड़।

**Proverbs 30:8**

<sup>8</sup> अर्थात् व्यर्थ और झूठी बात मुझसे दूर रख; मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना; प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर।

**Proverbs 30:9**

<sup>9</sup> ऐसा न हो कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इन्कार करके कहूँ कि यहोवा कौन है? या निर्धन होकर चोरी करूँ, और परमेश्वर के नाम का अनादर करूँ।

**Proverbs 30:10**

<sup>10</sup> किसी दास की, उसके स्वामी से चुगली न करना, ऐसा न हो कि वह तुझे श्राप दे, और तू दोषी ठहराया जाए।

**Proverbs 30:11**

<sup>11</sup> ऐसे लोग हैं, जो अपने पिता को श्राप देते और अपनी माता को धन्य नहीं कहते।

**Proverbs 30:12**

<sup>12</sup> वे ऐसे लोग हैं जो अपनी दृष्टि में शुद्ध हैं, परन्तु उनका मैल धोया नहीं गया।

**Proverbs 30:13**

<sup>13</sup> एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं उनकी दृष्टि क्या ही घमण्ड से भरी रहती है, और उनकी आँखें कैसी चढ़ी हुई रहती हैं।

**Proverbs 30:14**

<sup>14</sup> एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं, जिनके दाँत तलवार और उनकी दाँड़े छुरियाँ हैं, जिनसे वे दीन लोगों को पृथ्वी पर से, और दरिद्रों को मनुष्यों में से मिटा डालें।

**Proverbs 30:15**

<sup>15</sup> जैसे जोंक की दो बेटियाँ होती हैं, जो कहती हैं, “दे, दे,” वैसे ही तीन वस्तुएँ हैं, जो तृप्त नहीं होतीं; वरन् चार हैं, जो कभी नहीं कहती, “बस।”

**Proverbs 30:16**

<sup>16</sup> अधोलोक और बाँझ की कोख, भूमि जो जल पी पीकर तृप्त नहीं होती, और आग जो कभी नहीं कहती, ‘बस।’

**Proverbs 30:17**

<sup>17</sup> जिस आँख से कोई अपने पिता पर अनादर की वृष्टि करे, और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने, उस आँख को तराई के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे, और उकाब के बच्चे खा डालेंगे।

**Proverbs 30:18**

<sup>18</sup> तीन बातें मेरे लिये अधिक कठिन हैं, वरन् चार हैं, जो मेरी समझ से परे हैं:

**Proverbs 30:19**

<sup>19</sup> आकाश में उकाब पक्षी का मार्ग, चट्टान पर सर्प की चाल, समुद्र में जहाज की चाल, और कन्या के संग पुरुष की चाल।

**Proverbs 30:20**

<sup>20</sup> व्यभिचारिणी की चाल भी वैसी ही है; वह भोजन करके मुँह पोंछती, और कहती है, मैंने कोई अनर्थ काम नहीं किया।

**Proverbs 30:21**

<sup>21</sup> तीन बातों के कारण पृथ्वी काँपती है; वरन् चार हैं, जो उससे सही नहीं जातीं

**Proverbs 30:22**

<sup>22</sup> दास का राजा हो जाना, मूर्ख का पेट भरना

**Proverbs 30:23**

<sup>23</sup> धिनौनी स्त्री का व्याहा जाना, और दासी का अपनी स्वामिन की वारिस होना।

**Proverbs 30:24**

<sup>24</sup> पृथ्वी पर चार छोटे जन्तु हैं, जो अत्यन्त बुद्धिमान हैं

**Proverbs 30:25**

<sup>25</sup> चींटियाँ निर्बल जाति तो हैं, परन्तु धूपकाल में अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं;

**Proverbs 30:26**

<sup>26</sup> चट्टानी बिजू बलवन्त जाति नहीं, तो भी उनकी माँदें पहाड़ों पर होती हैं;

**Proverbs 30:27**

<sup>27</sup> टिड्डियों के राजा तो नहीं होता, तो भी वे सब की सब दल बाँध बाँधकर चलती हैं;

**Proverbs 30:28**

<sup>28</sup> और छिपकली हाथ से पकड़ी तो जाती है, तो भी राजभवनों में रहती है।

**Proverbs 30:29**

<sup>29</sup> तीन सुन्दर चलनेवाले प्राणी हैं; वरन् चार हैं, जिनकी चाल सुन्दर है:

**Proverbs 30:30**

<sup>30</sup> सिंह जो सब पशुओं में पराक्रमी है, और किसी के डर से नहीं हटता;

**Proverbs 30:31**

<sup>31</sup> शिकारी कुत्ता और बकरा, और अपनी सेना समेत राजा।

**Proverbs 30:32**

<sup>32</sup> यदि तूने अपनी बढ़ाई करने की मूर्खता की, या कोई बुरी युक्ति बाँधी हो, तो अपने मुँह पर हाथ रख।

**Proverbs 30:33**

<sup>33</sup> क्योंकि जैसे दूध के मथने से मक्खन और नाक के मरोड़ने से लहू निकलता है, वैसे ही क्रोध के भड़काने से झगड़ा उत्पन्न होता है।

**Proverbs 31:1**

<sup>1</sup> लमूएल राजा के प्रभावशाली वचन, जो उसकी माता ने उसे सिखाए।

**Proverbs 31:2**

<sup>2</sup> हे मेरे पुत्र, हे मेरे निज पुत्र! हे मेरी मन्त्रियों के पुत्र!

**Proverbs 31:3**

<sup>3</sup> अपना बल स्त्रियों को न देना, न अपना जीवन उनके वश कर देना जो राजाओं का पौरूष खा जाती हैं।

**Proverbs 31:4**

<sup>4</sup> हे लमूएल, राजाओं को दाखमधु पीना शोभा नहीं देता, और मदिरा चाहना, रईसों को नहीं फबता;

**Proverbs 31:5**

<sup>5</sup> ऐसा न हो कि वे पीकर व्यवस्था को भूल जाएँ और किसी दुःखी के हक्क को मारें।

**Proverbs 31:6**

<sup>6</sup> मदिरा उसको पिलाओ जो मरने पर है, और दाखमधु उदास मनवालों को ही देना;

**Proverbs 31:7**

<sup>7</sup> जिससे वे पीकर अपनी दरिद्रता को भूल जाएँ और अपने कठिन श्रम फिर स्मरण न करें।

**Proverbs 31:8**

<sup>8</sup> गूँगे के लिये अपना मुँह खोल, और सब अनाथों का न्याय उचित रीति से किया कर।

**Proverbs 31:9**

<sup>9</sup> अपना मुँह खोल और धर्म से न्याय कर, और दीन दरिद्रों का न्याय कर।

**Proverbs 31:10**

<sup>10</sup> भली पत्ती कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मूँगों से भी बहुत अधिक है।

**Proverbs 31:11**

<sup>11</sup> उसके पति के मन में उसके प्रति विश्वास है, और उसे लाभ की घटी नहीं होती।

**Proverbs 31:12**

<sup>12</sup> वह अपने जीवन के सारे दिनों में उससे बुरा नहीं, वरन् भला ही व्यवहार करती है।

**Proverbs 31:13**

<sup>13</sup> वह ऊन और सन ढूँढ़ ढूँढ़कर, अपने हाथों से प्रसन्नता के साथ काम करती है।

**Proverbs 31:14**

<sup>14</sup> वह व्यापार के जहाजों के समान अपनी भोजनवस्तुएँ दूर से मँगवाती है।

**Proverbs 31:15**

<sup>15</sup> वह रात ही को उठ बैठती है, और अपने घराने को भोजन खिलाती है और अपनी दासियों को अलग-अलग काम देती है।

**Proverbs 31:16**

<sup>16</sup> वह किसी खेत के विषय में सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है; और अपने परिश्रम के फल से दाख की बारी लगाती है।

**Proverbs 31:17**

<sup>17</sup> वह अपनी कमर को बल के फेंटे से कसती है, और अपनी बाहों को दढ़ बनाती है।

**Proverbs 31:18**

<sup>18</sup> वह परख लेती है कि मेरा व्यापार लाभदायक है। रात को उसका दिया नहीं बुझता।

**Proverbs 31:19**

<sup>19</sup> वह अटेरन में हाथ लगाती है, और चरखा पकड़ती है।

**Proverbs 31:20**

<sup>20</sup> वह दीन के लिये मुँदी खोलती है, और दरिद्र को सम्मालने के लिए हाथ बढ़ाती है।

**Proverbs 31:21**

<sup>21</sup> वह अपने घराने के लिये हिम से नहीं डरती, क्योंकि उसके घर के सब लोग लाल कपड़े पहनते हैं।

**Proverbs 31:22**

<sup>22</sup> वह तकिये बना लेती है; उसके वस्त्र सूक्ष्म सन और बैंगनी रंग के होते हैं।

**Proverbs 31:23**

<sup>23</sup> जब उसका पति सभा में देश के पुरानियों के संग बैठता है, तब उसका सम्मान होता है।

**Proverbs 31:24**

<sup>24</sup> वह सन के वस्त्र बनाकर बेचती है; और व्यापारी को कमरबन्द देती है।

**Proverbs 31:25**

<sup>25</sup> वह बल और प्रताप का पहरावा पहने रहती है, और आनेवाले काल के विषय पर हँसती है।

**Proverbs 31:26**

<sup>26</sup> वह बुद्धि की बात बोलती है, और उसके वचन कृपा की शिक्षा के अनुसार होते हैं।

**Proverbs 31:27**

<sup>27</sup> वह अपने घराने के चाल चलन को ध्यान से देखती है, और अपनी रोटी बिना परिश्रम नहीं खाती।

**Proverbs 31:28**

<sup>28</sup> उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं, उनका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है:

**Proverbs 31:29**

<sup>29</sup> “बहुत सी स्त्रियों ने अच्छे-अच्छे काम तो किए हैं परन्तु तू उन सभी में श्रेष्ठ है।”

**Proverbs 31:30**

<sup>30</sup> शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।

**Proverbs 31:31**

<sup>31</sup> उसके हाथों के परिश्रम का फल उसे दो, और उसके कार्यों से सभा में उसकी प्रशंसा होगी।